



माँ दुर्गा ज्वेलर्स

सोने एवं चांदी के आभूषणों के विक्रेता

उचित व्याज में गिरवी रखी जाती है।

शॉप नं.-69, सी-नाकर्ट, सेक्टर-6, भिलाई

मो.-9424124911



सीजेपी के सैलम और आशुतोष को तिहाड़ भेजा

नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी के आशुतोष रांका और सौरव दास को दिल्ली की स्पेशल कोर्ट ने 5 दिन की न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल भेज दिया है। वहीं, अजिंक्य शिंदे को निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया। तीनों को मंगलवार सुबह जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के दौरान हिरासत में लिया गया था। रात 3 बजे उन्हें गिरफ्तार किया गया। बुधवार सुबह स्पेशल कोर्ट में पेशी हुई। सीजेपी की लीगल टीम प्रमुख रत्ना सिंह के मुताबिक, तीनों पर बिना इजाजत जंतर-मंतर में घुसने, बॉन्ड की शर्तें तोड़ने और सरकारी काम में बाधा डालने के आरोप हैं।

बस्तर संभाग में कल से आंधी बारिश का अलर्ट

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मानसून का वापसी के बाद से मौसम ड्राई बना हुआ है। लेकिन कल यानी (15 अक्टूबर) से दक्षिण छत्तीसगढ़ में गरज-चमक के साथ तेज हवाएं (30-40 किमी/घंटा) चलने और बिजली गिरने का अलर्ट जारी किया गया है। प्रदेश में एक-दो जगहों पर हल्की बारिश होने की संभावना बनी हुई है, जिससे अगले 2 दिनों तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा। मौसम बदलने की वजह उत्तर प्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन का एक्टिव होना है। इसके चलते बारिश, तेज हवाओं और बंदरी की संभावना है।

पेपर लीक पर यूनिवर्सिटी में प्रदर्शन कहा-लापरवाही की तो थप्पड़ पड़ेगा

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों के डेटा को लेकर एनएसयूआई ने छात्रों के साथ मिलकर प्रदर्शन किया। इस दौरान एनएसयूआई के पीआरएसयू अध्यक्ष पुनेश्वर लहरे ने यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार कपिल देव को कहा कि छात्रों के साथ मजाक नहीं चलेगा। तीन-तीन पेपर लीक हुए हैं। थप्पड़ पड़ेगा, अगर गलती करोगे तो चाहे कोई भी हो।

मंगलवार को हुए प्रदर्शन के दौरान पुनेश्वर लहरे ने कुलसचिव के सामने परीक्षा से जुड़े आंकड़ों पर सवाल उठाते हुए युनिवर्सिटी की ओर से मांगे गए डेटा का कारण फाड़ दिया। छात्रों का आरोप है कि परीक्षा परिणामों में गड़बड़ी, एक-दो अंकों से फेल होने और ईयर बैक नियम के कारण हजारों स्टूडेंट्स का भविष्य प्रभावित हो रहा है।

इसी के विरोध में एनएसयूआई ने विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन का घेराव किया। प्रदर्शनकारियों ने परीक्षा मूल्यांकन में पारदर्शिता, उत्तरपुस्तिकाओं की दोबारा जांच



और परीक्षा से जुड़े आंकड़े सार्वजनिक करने की मांग की। छात्र नेताओं ने कुलपति से मुलाकात कर मांगों पर कार्रवाई के लिए 15 दिन का अल्टीमेटम दिया है। प्रदर्शन के दौरान छात्रों ने विश्वविद्यालय की ओर से दिए गए आंकड़ों पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि छात्रों के भविष्य से जुड़े मामले में अधूरी या सवालों से अलग जानकारी देकर काम नहीं चल सकता।

एनएसयूआई नेता ने कहा कि विश्वविद्यालय में तीन पेपर लीक होने की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। ऐसे में परीक्षा व्यवस्था को लेकर छात्रों की चिंताओं को गंभीरता से लेना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि दोबारा ऐसी गलती हुई तो छात्र विरोध करेंगे, चाहे जिम्मेदार कोई भी हो।

आधी शताब्दी के बाद छत्तीसगढ़ में लौट रहे काले हिरण, पीएम मोदी ने ‘मन की बात’ में किया था जिक्र

श्रीकंचनपथ समाचार

सारंगढ़। छत्तीसगढ़ के वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक बेहद सुखद और उत्साह बढ़ाने वाली खबर सामने आई है। राज्य के सारंगढ़-बिलागढ़ जिले में स्थित गोमर्दा वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी में करीब 50 साल बाद एक बार फिर काले हिरणों (ब्लैकबक) की गूंज सुनाई देगी। इस दुर्लभ प्रजाति को वापस लाने के लिए प्रशासन ने व्यापक स्तर पर तैयारियां पूरी कर ली हैं।

आधिकारिक जानकारी के मुताबिक, अगले एक हफ्ते के दौरान चरणबद्ध तरीके से 50 ब्लैकबक को गोमर्दा अभ्यारण्य में शिफ्ट किया जाएगा। इन वन्यजीवों को राज्य के ही बरनवापारा वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी से लाया जा रहा है, जहां पिछले कुछ वर्षों



में ब्लैकबक का ट्रांसलोकेशन अभियान बेहद सफल रहा है। विभागीय अधिकारियों के अनुसार, शिकार, अवैध शिकार (पोचिंग), अतिक्रमण और अंधाधुंध विकास कार्यों के कारण छत्तीसगढ़ के इस इलाके में ब्लैकबक की संख्या तेजी से घटने लगी थी। स्थिति यह बनी कि 1970 के दशक तक आते-आते ये

बलौदाबाजार जिले के बरनवापारा वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी में 77 ब्लैकबक का ट्रांसलोकेशन किया था। इनमें से 50 काले हिरण नई दिल्ली स्थित नेशनल जियोलॉजिकल पार्क और 27 बिलासपुर के कानन पेंडारी जूलॉजिकल गार्डन से लाए गए थे। इन प्रयासों का नतीजा यह रहा कि आज बरनवापारा में ब्लैकबक की संख्या बढ़कर 150 से ज्यादा हो गई है। बरनवापारा के सुपरिंटेंडेंट कृष्णन् चंद्राकर ने बताया कि नए माहौल में ढलने में उन्हें वक लगा, इसलिए उन्हें चरणों में खुले में छोड़ा गया। वन विभाग के अधिकारियों का मानना है कि गोमर्दा अभ्यारण्य का प्राकृतिक वातावरण इन हिरणों के लिए पूरी तरह मुफीद और अनुकूल है। इसलिए सफलता मिली है।

इससे पहले छत्तीसगढ़ राज्य वन्यजीव बोर्ड ने साल 2017-2018 में एक बड़े प्रोजेक्ट के तहत

के लिए भूपेश बघेल की ओर से आवेदन दिया गया था। भूपेश बघेल ने सुप्रीम कोर्ट के 28 सितंबर 2026 के आदेश का हवाला देते हुए यह आवेदन दिया था। हाईकोर्ट ने 5 अक्टूबर को आवेदन पर सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रखा था।

भूपेश बघेल ने सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश 14 के नियम 1, 2(2) और 5, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 87 का हवाला देते हुए अतिरिक्त मुद्दे जोड़ने की मांग की थी। अपने आवेदन में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के 28 सितंबर के आदेश के आधार का हवाला दिया था। 5 अक्टूबर को सुनवाई के दौरान विजय बघेल व्यक्तिगत रूप से साक्ष्य दर्ज कराने के लिए उपस्थित हुए थे। इसी दौरान भूपेश बघेल की ओर से अतिरिक्त मुद्दे तय करने के आवेदन की जानकारी दी गई। विजय बघेल की ओर से इस आवेदन पर विजय पहले ही पेश किया जा चुका था।

विजय बघेल ने बघेल के निर्वाचन को दी है चुनौती

दरअसल, पाटन विधानसभा चुनाव के परिणाम को चुनौती देते हुए भाजपा सांसद विजय बघेल ने चुनाव याचिका लगाई है। इसमें 2023 के विधानसभा चुनाव में भूपेश बघेल के निर्वाचन को चुनौती दी गई है।

भूपेश बघेल ने सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश 14 के नियम 1, 2(2) और 5, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 87 का हवाला देते हुए अतिरिक्त मुद्दे जोड़ने की मांग की थी। अपने आवेदन में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के 28 सितंबर के आदेश के आधार का हवाला दिया था। 5 अक्टूबर को सुनवाई के दौरान विजय बघेल व्यक्तिगत रूप से साक्ष्य दर्ज कराने के लिए उपस्थित हुए थे। इसी दौरान भूपेश बघेल की ओर से अतिरिक्त मुद्दे तय करने के आवेदन की जानकारी दी गई। विजय बघेल की ओर से इस आवेदन पर विजय पहले ही पेश किया जा चुका था।

सांध्य दैनिक

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534
डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./दुर्ग/1000000029/2026-28

श्रीकंचनपथ

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच



क्या है मुरिया दरबार

मुरिया दरबार विश्व प्रसिद्ध ‘बस्तर दशहरा’ की एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण रस्म है। मुरिया दरबार के साथ ही 75 दिनों तक चलने वाले बस्तर दशहरे का समापन होता है। इसे आदिवासियों की अनूठी ‘जन-संसद’ या जनजातीय लोकतंत्र भी माना जाता है। बताते हैं कि राजशाही दौर में राजा और महाराज इस दरबार का आयोजन करते थे। इस दिन राजा अपने शाही पोशाक को छोड़कर

सादे कपड़े पहनते थे और लोगों के बीच जमीन पर बैठकर दरबार लगाते थे। इस दरबार में सभी आदिवासी अपनी-अपनी समस्याएं राजा को बताते थे।

इसके बाद राजपरिवार की तरफ से उस समस्या के समाधान के लिए निर्देश दिए जाते थे। यह परंपरा आज भी चली आ रही है। अब मुरिया दरबार में गांव के मुखिया शामिल होते हैं और लोगों की समस्याएं सुनते हैं।

बस्तर दशहरा : क्या है मुरिया दरबार? 22 और 23 अक्टूबर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू होंगी शामिल

श्रीकंचनपथ समाचार

जगदलपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 22 और 23 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ का दौरा करेंगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने उन्हें हाल ही में विश्व-प्रसिद्ध बस्तर दशहरा उत्सव में शामिल होने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया था और छत्तीसगढ़ की यह यात्रा इसी निमंत्रण के आधार पर तय की गई थी। राष्ट्रपति बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार

में शामिल होंगी।

अधिकारियों के अनुसार, अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू रायपुर के लोक भवन और रायपुर के बुढ़ापारा स्थित बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होंगी। इसके अलावा, वह जगदलपुर के लालबाग मैदान में होने वाले प्रसिद्ध ‘मुरिया दरबार’ और बस्तर दशहरा के मुख्य सार्वजनिक कार्यक्रम में भी भाग लेंगी।

गंगा में नाव डूबी, 13 बच्चों की मौत 15 साल की बच्ची ने बचाई दो जानें

● मृत्यु भोज में शामिल होने जा रहे थे बच्चे ● छोटी और कमजोर थी नाव इसलिए हादसा ● गांव में पसरा मातम

वैशाली (ए.)। बिहार के वैशाली जिले के राधोपुर में गंगा नदी में नाव डूबने से 13 बच्चों की मौत हो गई। हादसे के बाद अफरा-तफरी मच गई। मृत बच्चों के शवों को रात में पोस्टमार्टम के लिए नहीं भेजा जा सका। गांव वालों ने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाकर शव को गांव में ही रोक लिया। लापता लोगों की तलाश के लिए सुबह फिर से रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया है। पीएम मोदी ने भी हादसे पर शोक संवेदना जतायी है।



राहत कार्य में जुटी हैं.

हादसे में 13 बच्चों की मौत हो गई है। सभी की उम्र 6 से 15 साल के बीच बताई जा रही है। मरने वालों में 7 बच्चियां एक ही परिवार की थीं। सभी बच्चों के शव गांव पहुंच गए हैं। परिजन ने पोस्टमार्टम से इनकार कर दिया है।

ग्रामीणों ने बताया कि रामपुर श्यामचंद के एक टोले के सभी बच्चे

नदी के उस पार सिंहधर राय के घर श्राद्ध भोज लिए जा रहे थे। इसी बीच नदी में नाव पलट गई और हादसा हुआ। नाव छोटी और टूटी हुई थी। सभी मृतक एक ही परिवार के हैं। ग्रामीणों ने सभी को बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन सभी को नहीं बचाया जा सका।

एक ग्रामीण रवि कुमार ने बताया कि राधोपुर के सर्कल ऑफिसर दीपक

इन बच्चों ने गंवाई जान

अंकिता (पिता राज किशोर राय)
अमृता (पिता राज किशोर राय)
सुनीता (पिता राज किशोर राय)
पिंकी (पिता डेमन राय)
आर्यन (पिता गांधी राय)
अनीशा (पिता सुरेंद्र राय)
मोन्नु कुमारी (पिता राम प्रवेश राय)
सिकी कुमारी (पिता सुरेश राय)
मीरा कुमारी (पिता राम नरेश राय)
निशु कुमारी (पिता सतेंद्र राय)
मोहन कुमार (पिता अखिलेश राय)
सोनम कुमारी (पिता नरेश राय)
नमन कुमार (पिता मुकेश राय)

कुमार को पहले ही नाव की जर्जर हालत के बारे में बताया गया था, फिर भी उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की और इसीलिए इतनी बड़ी त्रासदी हुई।

15 साल की चांदनी बनी रक्षक

हादसा राधोपुर में रात करीब 8:30 बजे हुआ। 15 साल की चांदनी ने 2 बच्चों की जान बचाई।

जिलाधिकारी ने की पुष्टि

जिलाधिकारी वर्षा सिंह ने हादसे में 13 बच्चों की मौत की पुष्टि की है। प्रशासन की ओर से राहत और बचाव कार्य जारी है। नाव प्राइवेट थी और छोटी थी जिसके कारण हादसा हो गया।



हाइटेक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल



3.5 लाख+
रोगियों का भरोसा

NABH Accredited

सबसे बड़ी टीम , सर्वोत्तम का विश्वास

न्यूरोलॉजी	कार्डियोलॉजी	यूरोलॉजी/ नेफ्रोलॉजी	गायनेकोलॉजी
डॉ. नविकेन दीक्षित न्यूरो मेडिसिन डॉ. दीपक बंसल न्यूरो सर्जरी	डॉ. दिलीप रत्नानी कार्डियोलॉजिस्ट (Eve) डॉ. घेतन चव्हांदी कार्डियोलॉजिस्ट	डॉ. नसीर वैराग्य यूरोलॉजिस्ट डॉ. सुमन राव किडनी केयर	डॉ. रेखा रत्नानी प्रसूति एवं IVF विशेषज्ञ डॉ. अंजना चौधरी बी एवं प्रसूति
आर्थोपेडिक्स	मेडिसिन	ऑन्कोलॉजी	सर्जरी
डॉ. राहुल राठौर ऑर्थोपेडिक्स (डायलैप्स) ऑर्थोपेडिक्स (डायलैप्स) डॉ. दीपक सिन्हा ऑर्थोपेडिक्स (डायलैप्स)	डॉ. देवेन्द्र नाड्डा जनरल मेडिसिन डॉ. अनंत एच. केकरे सेरियोगेनेरी, ओन्कोलॉजी		डॉ. नविल शर्मा मेडिकल ऑन्कोलॉजी डॉ. नरेश देशमुख विशेषज्ञ विशेषज्ञ
डेंटल/मैक्सिलोफेथियल	पीडियाट्रिक्स	डायग्नोस्टिक्स	24x7 क्लिनिकल केयर
डॉ. आफरीन आफताब मैक्सिलोफेथियल सर्जन डॉ. वैष्णवी शर्मा डेंटल सर्जन	डॉ. रुचि ठाकुर पिडियाट्रिक्स डॉ. प्रेरणा जैन रबीय बरगैरेट	डॉ. जेनी व्यास रडियोलॉजिस्ट डॉ. रजनी प्रजापति रडियोलॉजिस्ट	डॉ. नीरामा बघोडे किडनल हेल्थ केयर डॉ. अर्पु वर्मा नयन-नक-मसा
गैट्रोएंट्रोपॉलॉजी	फिजियोथेरेपी	आयुर्वेदमोलांजी	इमर्गेन्सी
डॉ. निरुध कुमारी गैट्रोएंट्रोपॉलॉजिस्ट डॉ. अर्चना लक्ष्मणी फिजियोथेरेपिस्ट	डॉ. रिया शर्मा थेरापी विशेषज्ञ डॉ. निधि अरोरा कार्डियोलॉजिस्ट	डॉ. एम.जी. गोमेल पार्थिविक सर्जन	डॉ. गैट्रोएंट्रोपॉलॉजी
2500 + एंजियोप्लास्टी 12000 + एंडोस्कोपी	12000 + सर्जरी 40000 + डायलिसिस	400 + प्रत्यारोपण 150 + आइवीएफ	CGHS, CORPORATE (रैलवे नागपुर से अनुबंधित) सहित सभी TPA के साथ अनुबंधित

जुनवानी रोड, भिलाई, सूर्या टीआई मॉल के पास

0788-405 6666 73891-92333

अधिक जानकारी के लिए सैलन करें
https://hitekhhospitals.com for ONLINE BOOKING




संपादकीय

नशा विरोधी की हत्या

नशे से लड़ने वालों की सुरक्षा का सवाल

पंजाब के मानसा में नशीले पदार्थ बेचने वालों के खिलाफ मुहिम चलाने वाले एंटी ड्रग एक्टिविस्ट परविंदर सिंह की हत्या बताती है कि इस जहरीले कारोबार के खिलाफ लड़ाई कितनी मुश्किल है। यह भी कि नशे के खिलाफ मुखर होने वाले जिम्मेदार नागरिकों की सुरक्षा को लेकर शासन-प्रशासन को गंभीर होना होगा। नशे की लत लगाने वाली टैबलेट बेचने वाले कैमिस्ट के साथ बहस के बाद सरेआम यह हत्या की गई। जिससे नशे के कारोबार में सलिस लोगों के दुस्साहस का पता चलता है। घटना बताती है कि इस बुराई के खिलाफ काम करने वाले लोगों को सुरक्षा देने में हमारा तंत्र नाकाम हुआ है। पंजाब के ग्रामीण इलाकों में नशे के खिलाफ काम करने वाले गांव के वॉलंटियर्स की हत्याएं पहले भी होती रही हैं। जिससे पता चलता है कि यह खतरा नया नहीं है। इस घटना से जुड़ी पेशान करने वाली बात यह भी है कि हमलावर व मृतक के बीच रॉजश का पुराना इतिहास रहा है। बताते हैं कि वर्ष 2023 में भी एंटी ड्रग एक्टिविस्ट परविंदर सिंह ने कैमिस्ट अश्वनी कुमार के खिलाफ प्रतिबंधित कैप्सूल बेचने के आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज करवायी थी। तब पुलिस ने दुकान के मालिक के खिलाफ मामला तो दर्ज किया था, लेकिन परविंदर सिंह पर भी कानून अपने हाथ में लेने का आरोप लगाया था। दरअसल, आरोप था कि उसने कैमिस्ट को गले में जूते पहनाकर बाजार में घुमाया था। अब तीन साल बाद, उसी दुकान पर हुई एक और झड़प में एंटी ड्रग एक्टिविस्ट परविंदर सिंह की मौत हो गई। गोलीबारी की इस घटना में परमिंदर के चार साथी भी घायल हुए हैं। कुछ लोगों का मानना था कि एंटी ड्रग एक्टिविस्ट परविंदर सिंह को ख़ुद इसके खिलाफ क्यों खड़ा होना पड़ा?

उल्लेखनीय है कि इससे पहले वर्ष 2023 में, फरीदकोट में हरभगवान सिंह और बठिंडा में जसवीर सिंह, जैसे नशे के खिलाफ काम करने वाले वॉलंटियर्स की भी हत्या कर दी गई थी। तब भी आरोप लगे थे कि ये हत्याएं नशे के कारोबार का विरोध करने के कारण हुई थीं। निस्संदेह, इस बुराई के खिलाफ लड़ने वाले नशा विरोधी कार्यकर्ताओं की हत्याओं के मामले में बारीकी से जांच करने की जरूरत है। मानसा की घटना की तह तक जाकर पता लगया जाना चाहिए कि आखिर गोलीबारी की घटना क्यों हुई? क्या पहले भी ऐसी धमकियां दी गई थीं? साथ ही पुलिस को यह भी बताना चाहिए कि पिछली शिकायत पर क्या कोई ठोस कार्रवाई हुई थी? क्या प्रतिबंधित दवाइयों की बिक्री के मामले में संबंधित विभागों व पुलिस द्वारा ठीक से जांच की गई थी? क्या ड्रग कंट्रोल अधिकारियों ने दुकान में प्रतिबंधित दवाओं की मौजूदगी की पड़ताल की थी? वक्त की जरूरत है कि मुख्यमंत्री भगवंत मान की वरिष्ठ पुलिस-प्रशासन के अधिकारियों के साथ हुई बैठक का नतीजा ठोस कार्रवाई के रूप में निकलना चाहिए। अब पहले की तरह सिर्फ आश्वासन से काम नहीं चलने वाला। वास्तव में समय रहते गैर-कानूनी दवा बिक्री की शिकायतों की जांच होनी चाहिए। इस बाबत प्रिस्क्रिप्शन और स्टॉक रिकॉर्ड की भी जांच होनी चाहिए। इसके साथ ही लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। सही मायने में पंजाब के नशा विरोधी अभियान को सिर्फ गिरफ्तारियों और नशीले पदार्थों की जल्ती के आधार पर नहीं आंका जा सकता है। इसे इस आधार पर परखा जाना चाहिए कि क्या वास्तव में नशीले पदार्थों को हासिल करना कठिन हुआ है? क्या नशे के खिलाफ सहयोग करने वाले लोग बिना भयभीत हुए संदिग्ध अपराधियों की सूचना शासन-प्रशासन को दे सकते हैं। इस घटनाक्रम के बाद अपनी सुविधा के हिसाब से राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई है। पंजाब नशे के जिस संकट से गुजर रहा है, सभी राजनीतिक दलों का दायित्व है कि संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर बदलावकारी लड़ाई के लिये सहयोग करें।

विचार

चिकित्सा क्षेत्र में बढ़ते बाजारीकरण का संकट

चंद्रकांत लहरीया

देश में स्वास्थ्य सेवाओं के बढ़ते कॉर्पोरेटीकरण से नैतिक संकट उपजा है। मुनाफे की सोच से जहां डॉक्टर-मरीज संबंधों पर असर पड़ा, वहीं मेडिकल नैतिकता पर भी। दवा कंपनियों और संस्थानों का दबाव है। प्राथमिकता डॉक्टरी पेशे की स्वायत्तता और मरीज का हित हो।

भारतीय निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र पिछले चार दशकों में बने सामाजिक और नैतिक संकट का सामना कर रहा है। इसकी शुरुआत अस्पताल क्षेत्र में कॉरपोरेट घरानों के प्रवेश से हुई और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वेंचर कैपिटल एवं निजी निवेश से इसने रफ्तार पकड़ी। यह संकट ढांचागत है। निजी स्वास्थ्य सेवा के विकास ने ऐसी व्यवस्थाएं बनाई हैं, जिनमें डॉक्टरों से अस्पतालों, दवा कंपनियों और संबंधित हितधारकों के लिए मुनाफा कमाने की अपेक्षा की जाती है। उपचार निर्णय, जोकि रोगी की ज़रूरत से निर्धारित होना चाहिए, उस पर व्यावसायिक प्रोत्साहनों और चिकित्साकरण का प्रभाव हावी हो गया है।

इस परिवर्तन ने डॉक्टर-रोगी संबंध को बदल डाला। चिकित्सक अब मात्र स्वतंत्र पेशेवर नहीं रह गया जो रोगी के प्रति जवाबदेह हो। कई डॉक्टर नैतिक बने हुए हैं और कई कॉरपोरेट अस्पताल भी उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रहे हैं, तथापि ‘प्रोत्साहन रूपी लालच’ पेशेवर आजादी कायम रखना मुश्किल कर देता है।

मसलन कॉर्पोरेट अस्पतालों में डॉक्टरों को वेतन तो मिलता है, लेकिन मालिकों की अपेक्षा होती है कि वे अधिकारिता कमई कर दिखाएं, रोगी संख्या बढ़ाएं, जांच, भर्ती और इलाज प्रक्रियाओं में अधिक मुनाफा बनवाएं। भारत में स्वास्थ्य सेवा के कॉर्पोरेटीकरण पर एक शोध में उपाजित लक्ष्य, डॉक्टरों सलाह को अस्पताल भर्ती में परिवर्तित करने या एक-दो दिन वाले इलाज को लंबा खींचने को दबाव बनाने और घटती स्वायत्तता को दर्ज किया है।

ऐसे रंग-ढंग ने ‘अच्छे’ डॉक्टर की परिभाषा बदल दी है। जो चिकित्सक मरीजों को नेक डॉक्टरों सलाह देते हैं, बीमारी पर सावधानी भरा इंतजार करने की सलाह देते हैं या किसी महंगी प्रक्रिया से बचने की सलाह देते हैं, वे अधिक टेस्ट और उपचार करवाने वाले डॉक्टरों की तुलना में कम पैसा कमाते हैं। एक बार जब व्यावसायिक उत्पादकता कार्य क्षमता का पैमाना बन जाए तो नेक इरादे वाले डॉक्टर भी मरीजों के हितों के विपरीत ‘प्रोत्साहनों’ के लालच में फंस सकते हैं। कई चिकित्सकों का इलाज के दाम तय

अमरेंद्र किशोर

यह बहस बिजली बनाम पर्यावरण की नहीं, इस सवाल की है कि हम किसकी कीमत पर किसकी रोशनी चाहते हैं। बिजली देश की ज़रूरत है, पर पहाड़ के ख़ाली होते गांव उसकी कीमत नहीं हो सकते। सतलुज किनारे बसे उरनी गांव में एक स्थानीय निवासी अपने घर की दीवार पर पड़ी दरार को उंगली से छूता है, जैसे कोई बुजुर्ग अपने बच्चे का घाव सहलाता हो। गांव के नीचे से करछम वांग्तु परियोजना की सुर्रों गुज़रती हैं, और उस ब्यक्ति की शिकायत मुआवज़े से ज़्यादा इस बात की है कि सुर्रंग बिछाने से पहले किसी ने उनसे पूछा तक नहीं। दरार देखने में छोटी है, पर उसमें एक पूरे समाज की अनसुनी पीड़ा दर्ज है।

यहीं विकास की हमारी परिभाषा कठपुतरे में खड़ी होती है। बिजली को प्रगति का पर्याय मान लिया और पहाड़ को ऐसा

संसाधन, जिससे ऊर्जा निचोड़ी जा सके। जबकि पहाड़ किसी के लिए संसाधन है तो किसी के लिए घर, देवता और स्मृति। किन्नौर में सतलुज, बास्या और स्पीति की घाटियां दुनिया के सबसे नाजूक भूभागों में गिनी जाती हैं। वहीं नाथपा-झाकड़ी जैसी डेढ़ हज़ार मेगावाट की परियोजना की मुख्य सुर्रंग लगभग सताईस किलोमीटर लंबी है। करछम वांग्तु, बास्या-दो, कशांग और शोंगटोंग-करछम जैसी परियोजनाओं के साथ दर्जनों और प्रस्तावित हैं। हर परियोजना नदी को सुर्रंग में मोड़ती है और पहाड़ के भीतर किलोमीटरों लंबा होता। वह बुजुर्गों की बनाई परंपरा है, खेत की सांस है, सेब के बगीचों का भविष्य है और भवेशियों की जिंदगी है। पहाड़ के गांव नलकों से नहीं, प्राकृतिक स्रोतों से जीते हैं। सुर्रंग खोदते समय चट्टानों की जल-धाराएं कट



बड़ी वैचारिक चूक यही है कि हम पेड़ गिनते हैं और जंगल को नहीं देखते।

इस चूक की पहली कीमत पानी चुका रहा है, और पहाड़ में पानी का मतलब सिर्फ प्यास नहीं होता। वह बुजुर्गों की बनाई परंपरा है, खेत की सांस है, सेब के बगीचों का भविष्य है और भवेशियों की जिंदगी है। पहाड़ के गांव नलकों से नहीं, प्राकृतिक स्रोतों से जीते हैं। सुर्रंग खोदते समय चट्टानों की जल-धाराएं कट



कितने समय तक वास्तव में इलाज की ज़रूरत है, और दवा के बगैर कौन से उपचार ढंग का महत्त्व कायम है। कॉर्पोरेट स्वास्थ्य क्षेत्र में दवाएं तेज़ी से मुख्य भूमिका में आ रही हैं।

ये चिंताएं लंबे समय से चली आ रही हैं। 2018 में, समीरन नंदी, केशव देशिराजु और संजय नागराल ने ‘स्वास्थ्य सेवा रक्षक या भक्षक? भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में भ्रष्टाचार’ नामक पुस्तक संपादित की थी। इसमें हितों का टकराव, कॉर्पोरेट अस्पतालों के तौर-तरीके, दवा उत्पादक कंपनियों का प्रभाव, मेडिकल नियमन और व्यावसायिक नैतिकता की जांच की गई थी। आज भी इसकी प्रासंगिकता चिंताजनक है। चिकित्सा जगत ने बार-बार इस समस्या की शिनाख्त तो की, लेकिन सुधार सीमित ही रहा।

कमजोर नियमन मुख्य समस्या है। भारत में डॉक्टरों के लिए नैतिकता संहिता और दवा उत्पादन की मार्केटिंग का नियंत्रण करने वाले नियम हैं। रेफरल कमिशन, गलत प्रोत्साहन और व्यापारिक प्रभावों के नाना तरीकों पर रोक है। फिर भी, क्रियान्वयन एक समान नहीं और अक्सर कार्रवाई शिकायतों या घोटालों के बाद होती है, न कि व्यवस्थित निगरानी के जरिए। जब क्रियान्वन ही अनिश्चित हो, तो नैतिक संहिता का कोई खास मतलब नहीं। फिर भी, भारत में हम दिखावे पर ज़्यादा ध्यान देते हैं। 2022 में, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने मेडिकल पढ़ाई शुरू करने वाले छात्रों के लिए नई ‘चरक शपथ’ की सिफारिश की। मकसद इसे नए चिकित्सकों को ऐतिहासिक रूप से दिलाई जाने वाली ‘हिप्पोक्रेटिक शपथ’ की जगह लेना था। हालांकि, दोनों सेवा व मरीज की भलाई को चिकित्सा पेशे के केंद्र में रखती हैं। पर शपथ तब दिखावा बनकर रह जाती है जब

लोग जाते हैं। इसी धीमी प्रक्रिया से आशंका है कि आने वाले दशकों में किन्नौर के गांवों से पलायन की लहर उठे।

दीवारों की दरारें इसी कहानी का दूसरा अध्याय हैं। सुर्रंग के लिए होने वाली ब्लैस्टिंग के कंपन घरों की नींव हिला देते हैं। निगुलसरी और झाकड़ी में मई, 2014 में दर्ज हुई दरारें, यूला का फटा हुआ मकान और चुगांव की गौशाला की दीवारें, सब इसी सिलसिले की कड़ियां हैं। किन्नौर संविधान की पांचवीं अनुसूची का क्षेत्र है, जहां ग्राम सभा की भूमिका निर्णायक मानी गई है, फिर भी सुर्रों गांवों के नीचे से निकलती रहें और लोगों को पता तब चला, जब उनके घर चटकने लगे।

वर्ष 2021 ने इस चेतावनी को और साफ कर दिया। जुलाई में बास्या घाटी के बटसेरी में पत्थर गिरने से नौ पर्यटकों की मौत हुई।

युवा डॉक्टर ऐसी जगह ट्रेनिंग लेते हों जहां व्यापारिक ध्येय, हितों का टकराव और गैर-ज़रूरी दखल का सामान्यीकरण हो चुका है। शपथ से ज़्यादा अहम है कि क्या संस्थान चिकित्सक को सिद्धांतों के अनुसार इलाज करने देते हैं। अन्य घटनाओं ने भी इन दबावों को बढ़ाया। देश में विशेषज्ञता वाली चिकित्सा शिक्षा तेजी से बढ़ने के मद्देनज़र भारत खुद को मेडिकल टूरिज़्म के मुकाम के तौर पर रख रहा है। दोनों के फायदे हैं, लेकिन इनसे अस्पताल नेटवर्क की आर्थिक ताकत ज़्यादा मजबूत हो सकती है। विशेषज्ञता वाले डॉक्टर आधारभूत ढांचा, रोग पहचान तंत्र, मरीज प्रबंध और अपनी व्यावसायिक पहचान के लिए संस्थानों पर निर्भर हो रहे हैं, जिससे क्लिनिक आधारित इलाज से कमाई की ताकत घट रही है।

मकसद पुराने दौर को बढ़िया बताकर पेश करना नहीं। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सदा ही धन, पदानुक्रम और हितों का टकराव बना रहा है। न ही कॉर्पोरेट अस्पताल और न ही दवा उत्पादक कंपनियां अपने आप में अनैतिक होती हैं। चिंता यह है कि स्वास्थ्य सेवा का मतलब अब ज़्यादातर दवाएं, टेस्ट, सर्जलीमेंट्स, प्रोसीजर और ज़्यादा खर्च बन गया है। डॉक्टर ऐसी चीजें सही ठहराने लगे हैं जिनकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत नहीं, और मरीजों को ऐसे इलाज भुगतने पड़ते हैं। अनिवार्य प्रश्न है कि क्या व्यापारिक लाभ चिकित्सकीय निर्णयों के अधीन बने रहें या उन पर हावी होते जाएं।

सभी तरह की शपथ का ध्येय है: चिकित्सा का वजूद सर्वप्रथम मरीज़ के हित में हो। पेशेवर आजादी, सही इलाज और जनता के भरोसे के लिए इस सिद्धांत को बनाए रखना ज़रूरी है। जब मरीजों को शक हो जाए कि परीक्षणों, दवा की पर्ची, इलाज प्रक्रिया में किसी और के पास भेजने या उपचार क्रिया के पीछे छिपे आर्थिक मक़सद हैं, तो इससे डॉक्टरों की नैतिक साक्ष कमज़ोर होती है और स्वास्थ्य देखभाल मंडी सरीखा व्यापार बन जाता है।

भारतीय चिकित्सा के सामने संकट सिर्फ इलाज पर खर्च की मात्रा का नहीं, बल्कि इसका है कि चिकित्सा का स्वरूप क्या से क्या बनता जा रहा। भारत को एक ऐसे आधुनिक स्वास्थ्य तंत्र की ज़रूरत है जिसमें पूंजी इलाज करने में लगे, तकनीक उपचार में फ़ैसले लेने में सहायक हो और संस्थान पेशेवर नैतिकता से समझौता करने के बजाय उसकी रक्षा करें। शपथ का महत्व तभी होता है जब व्यवस्था उसे निभाने का मौका दे।

लेखक चिकित्सक हैं और डब्ल्यूएचओ में सेवारत रहे हैं।

पटाखों पर प्रतिबंध नहीं, प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण ज़रूरी

सौरभ वार्षोय

त्योहार भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। दीपावली जैसे पर्व केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव, पारिवारिक एकता और खुशियों के उत्सव भी हैं। दीपों की रोशनी, घरों की सजावट, मिठाइयों का आदान प्रदान और पूजा अर्चना हमारी सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न हिस्सा हैं। लेकिन जब त्योहारों की खुशियां वायु प्रदूषण, सांस संबंधी बीमारियों और बच्चों बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर संकट बनकर सामने आने लगें, तब यह विचार करना ज़रूरी हो जाता है कि उत्सव मनाने का तरीका कैसा हो। दिल्ली-एनसीआर में पटाखों पर रोक लगाने की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई ने एक बार फिर इसी महत्वपूर्ण सवाल को देश के सामने रखा है।

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को पटाखों पर प्रतिबंध की मांग पर सुनवाई करते हुए कहा कि लोगों के स्वास्थ्य और धार्मिक भावनाओं के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने लोगों से कम प्रदूषण वाले तरीकों से त्योहार मनाने की अपील की। पीठ में न्यायमूर्ति जयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना भी शामिल थे। सुनवाई के दौरान अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि पटाखों से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक करना ज़रूरी है। मामले की अगली सुनवाई 15 अक्टूबर को निर्धारित की गई है। इस सुनवाई में वरिष्ठ अधिवक्ता और न्याय मित्र अपराजिता सिंह की टिप्पणी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। उन्होंने कहा कि यदि भागवानों को पता चले कि उनके नाम पर बच्चे पीड़ित हो रहे हैं और बीमार पड़ रहे हैं, तो वे भी हैरान रह जाएंगे। इस कथन का मूल संदेश स्पष्ट है कि धार्मिक आस्था का उद्देश्य मानव कल्याण होना चाहिए, न कि ऐसा कोई व्यवहार जो दूसरों के स्वास्थ्य और जीवन के लिए पेशेनाी पैदा करे। धर्म और परंपरा के नाम पर किए जाने वाले किसी भी कार्य



पर विचार करते समय उसके सामाजिक प्रभावों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।

दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण लंबे समय से गंभीर चिंता का विषय रहा है। वाहनों से निकलने वाला धुआं, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, औद्योगिक उत्सर्जन और मौसम संबंधी परिस्थितियां प्रदूषण को प्रभावित करती हैं। दीपावली के दौरान पटाखों से निकलने वाला धुआं और सूक्ष्म कण इस समस्या को और बढ़ा सकते हैं। इसका प्रभाव विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों, दमा और अन्य सांस संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोगों पर पड़ सकता है।

प्रदूषण का संकट किसी एक परिवार या वर्ग तक सीमित नहीं रहता। पटाखे जलाने वाला व्यक्ति कुछ मिनेटों के उत्साह के बाद सामान्य जीवन में लौट सकता है, लेकिन उससे निकलने वाले धुएं का असर आसपास रहने वाले लोगों को भी डोलना पड़ सकता है। ऐसे में व्यक्तिगत खुशी और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बीच संतुलन स्थापित करना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बन जाता है।

यह भी समझना होगा कि प्रदूषण के लिए केवल पटाखों को जिम्मेदार ठहराकर बाकी स्रोतों की अनदेखी करना समाधान नहीं है। यदि सरकार वास्तव में दिल्ली-एनसीआर की हवा को स्वच्छ बनाना चाहती है, तो उसे सालभर प्रदूषण फैलाने वाले सभी प्रमुख स्रोतों पर प्रभावी कार्रवाई करनी होगी। पटाखों पर नियमों के साथ-साथ वाहनों, निर्माण स्थलों, औद्योगिक इकाइयों और खुले में कचरा जलाने जैसी गतिविधियों पर भी नियंत्रण आवश्यक है। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान यह भी संकेत दिया कि किसी आदेश को लागू करने से पहले उसकी व्यावहारिकता पर विचार करना ज़रूरी है। केवल प्रतिबंध लगा देना पर्याप्त नहीं है। यह देखना भी आवश्यक है कि नियमों का पालन कैसे कराया जाएगा, उल्लंघन करने वालों पर किस प्रकार कार्रवाई होगी और आम लोगों को इसके प्रति जागरूक करने की क्या व्यवस्था होगी।

न्यायमूर्ति जयमाल्या बागची द्वारा पटाखे फोड़ने के धार्मिक आधार पर सवाल उठाना भी विचारणीय है। भारतीय परंपराओं में दीपावली का प्रमुख संदेश अंधकार

पर प्रकाश और अज्ञान पर ज्ञान की विजय है। दीप जलाना, पूजा करना, ज़रूरतमंदों की सहायता करना और परिवार तथा समाज के साथ खुशियां बांटना इस पर्व की व्यापक सांस्कृतिक भावना को व्यक्त करते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि परंपराओं को समय, परिस्थिति और सामाजिक उत्तरदायित्व के अनुरूप समझा जाए। मुख्य न्यायाधीश ने लोगों को जागरूक करने और अपनी मूल संस्कृति की ओर लौटने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने उस परंपरा का उल्लेख किया जिसमें दीप जलाने और फुलझड़ियां जलाने जैसे सीमित साधनों से उत्सव मनाया जाता था। इसका आशय उत्सव की खुशियों को समाप्त करना नहीं, बल्कि उन्हें ऐसा स्वरूप देना है जिससे दूसरों के जीवन और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

पिछले वर्ष दीपावली से पहले दिल्ली की वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई का स्तर 200 के पार पहुंचने की खबरों के बीच सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली एनसीआर में निर्धारित शर्तों के तहत ग्रीन पटाखों की बिक्री और इस्तेमाल की अनुमति दी थी। इसका उद्देश्य धार्मिक परंपराओं और पर्यावरण तथा स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास था। हालांकि, ग्रीन पटाखों को प्रदूषण से पूरी तरह मुक्त मान लेना भी उचित नहीं होगा। उनका वास्तविक प्रभाव उत्पाद की गुणवत्ता, निर्धारित मानकों और इस्तेमाल की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसलिए केवल किसी उत्पाद को ग्रीन पटाखा कह देना पर्याप्त नहीं है। उसकी प्रामाणिकता की जांच, बिक्री पर निगरानी और निर्धारित समय तथा स्थान संबंधी नियमों का पालन सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके लिए प्रशासन को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए। पुलिस, प्रदूषण नियंत्रण एजेंसियों और स्थानीय निकायों के बीच समन्वय होना चाहिए। बाजारों में प्रतिबंधित पटाखों की बिक्री रोकने के साथ-साथ लोगों को नियमों की जानकारी भी दी जानी चाहिए। स्कूलों, आवासीय समितियों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं। नियमों का

उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई हो, लेकिन आम नागरिकों को केवल दंड के भय से नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की समझ से भी प्रेरित किया जाए।

पटाखों पर प्रतिबंध के पक्ष और विरोध में अलग-अलग तर्क दिए जाते रहे हैं। कुछ लोग इसे पर्यावरण और जनस्वास्थ्य की दृष्टि से ज़रूरी मानते हैं, जबकि अन्य धार्मिक परंपराओं और उत्सव मनाने की स्वतंत्रता का सवाल उठाते हैं। इन दोनों पक्षों के बीच संवाद और वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित नीति की आवश्यकता है। न्यायालय के सामने भी चुनौती यही है कि ऐसा आदेश तैयार हो जो कानूनी रूप से स्पष्ट होने के साथ व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सके।

सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी केवल आदेश जारी करने तक सीमित नहीं हो सकती। उन्हें प्रदूषण के कारणों पर लगातार निगरानी रखनी होगी और जनता को सही जानकारी उपलब्ध करानी होगी। नागरिकों को भी यह समझना होगा कि त्योहार मनाने की स्वतंत्रता के साथ दूसरों के स्वास्थ्य और सुविधा का सम्मान करना ज़रूरी है।

दीपावली की असली चमक पटाखों के शोर में नहीं, बल्कि घरों में जलते दीपों, समाज में फैली खुशियों और ज़रूरतमंदों के जीवन में आने वाली रोशनी में है। यदि हम अपने उत्सवों को अधिक सुस्थित, संवेदनशील और पर्यावरण के अनुकूल बना सकें, तो इससे परंपराओं का महत्व कम नहीं होगा, बल्कि उनका मानवीय पक्ष और मजबूत होगा। सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई ने इसी व्यापक प्रश्न पर विचार करने का अवसर दिया है। अब आवश्यकता है कि अदालत के निर्देशों, प्रशासनिक कार्रवाई और नागरिकों की जागरूकता के बीच तालमेल स्थापित हो। धार्मिक आस्था का सम्मान और जनस्वास्थ्य की रक्षा एक-दूसरे के विरोधी नहीं होने चाहिए। वास्तविक संतुलन वही होगा जिसमें त्योहारों की खुशियां भी बनी रहें और किसी बच्चे, बुजुर्ग या बीमार व्यक्ति को उन खुशियों की कीमत अपनी सेहत से न चुकानी पड़े।

सेवा संकल्प

महतारी सदन से मिलेगा प्रशिक्षण और स्वरोजगार के अवसर



रायपुर। ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी सामूहिक भागीदारी बढ़ाने की दिशा में सकी जिले के डभरा विकासखंड के ग्राम पंचायत गोबरा में महतारी सदन भवन का निर्माण पूरा हो गया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में स्वीकृत इस भवन का निर्माण 30 लाख रुपये की लागत से कराया गया है। यह केंद्र महिलाओं को प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुविधाओं और आजीविका गतिविधियों के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराएगा। महतारी सदन में महिलाओं की बैठक और प्रशिक्षण के लिए 10म6 वर्ग मीटर का बड़ा हॉल बनाया गया है। इसके अलावा दुकान, स्वतंत्र कार्यालय, रसोईघर, स्टोर रूम और सामुदायिक शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। भवन का उपयोग विभिन्न सामुदायिक, प्रशिक्षण और आवासीय गतिविधियों के लिए किया जा सकेगा। इस केंद्र में स्व-सहायता समूहों की महिलाओं के साथ कृषि सखों, बैंक सखी और स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी। यहां स्वास्थ्य शिविर, पोषण संबंधी कार्यक्रम और आजीविका गतिविधियों से जुड़े आयोजन भी किए जा सकेंगे। महिलाएं अपनी कार्ययोजनाएं तैयार करने के साथ स्वरोजगार के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेंगी। छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी सदन योजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ सामाजिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ाना है। गोबरा में तैयार यह भवन महिलाओं को अपनी क्षमताएं विकसित करने, रोजगार के अवसर तलाशने और गांव के विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

- ▶ स्कूल स्तर से बच्चों को खेलों से जोड़ने के निर्देश, खेलों को करियर के रूप में अपनाने के लिए तैयार होगा अनुकूल वातावरण
- ▶ फीडर सेंटर से सेंटर ऑफ एक्सीलेंस तक विकसित होगा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण का सुनियोजित तंत्र
- ▶ आधुनिक खेल अधोसंरचना के साथ स्पोर्ट्स साइंस, प्रशिक्षित कोच, पोषण और नियमित प्रतियोगिताओं पर रहेगा फोकस
- ▶ बिलासपुर स्पोर्ट्स एक्सीलेंस सेंटर की क्षमता 165 से बढ़ाकर 300 करने की योजना

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। गांवों, जनजातीय क्षेत्रों और दूरस्थ अंचलों में ऐसी अनेक प्रतिभाएं हैं, जिन्हें सही समय पर पहचान, बेहतर प्रशिक्षण, आधुनिक सुविधाएं और प्रतियोगिता के पर्याप्त अवसर मिलें तो वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ा सकती हैं। राज्य सरकार का लक्ष्य ऐसी प्रतिभाओं के लिए गांव के खेल मैदान से लेकर अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तक आगे बढ़ने का सुनियोजित मार्ग तैयार करना है। मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन इसी सोच को धरातल पर उतारने की महत्वपूर्ण पहल है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज मंत्रालय महानदी भवन में मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि ज्ञानेश्वरी यादव और संजु देवी जैसी प्रदेश की प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपनी उपलब्धियों से यह साबित किया है कि छत्तीसगढ़ के युवाओं में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल मंचों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की भरपूर क्षमता है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रतिभाओं की पहचान कम उम्र में हो और उन्हें लगातार गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन तथा उच्चस्तरीय प्रतियोगिताओं का अनुभव मिले।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मिशन की कार्ययोजना ऐसी हो, जिसमें खिलाड़ी की प्रतिभा की पहचान से लेकर उसके उच्च प्रदर्शन वाले खिलाड़ी बनने तक की पूरी यात्रा के लिए स्पष्ट व्यवस्था हो।

प्रतिभाओं की पहचान से लेकर उत्कृष्ट प्रशिक्षण तक तैयार होगा मजबूत स्पोर्ट्स इकोसिस्टम

खेल प्रतिभाओं को गांव के मैदान से अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य : मुख्यमंत्री साय

अगले पांच वर्षों के लिए तैयार होगी स्पष्ट कार्ययोजना

मुख्यमंत्री साय ने मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन के लिए आगामी पांच वर्षों की स्पष्ट, परिणामोन्मुख और व्यावहारिक कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में मिशन के विभिन्न घटकों के क्रियान्वयन और वित्तीय प्रबंधन पर भी विस्तृत मंथन किया गया। मुख्यमंत्री ने खेल एवं युवा कल्याण विभाग के साथ स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य, नगरीय प्रशासन तथा अन्य संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया। सभी संबंधित विभागों को समन्वित प्रयास करते हुए प्रदेश में मजबूत खेल संस्कृति और खिलाड़ियों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार की कोशिश केवल खेल सुविधाओं का विस्तार करने तक सीमित नहीं है, बल्कि छत्तीसगढ़ में एक ऐसा मजबूत स्पोर्ट्स इकोसिस्टम विकसित करना है, जिसमें प्रतिभा की पहचान, प्रशिक्षण, खेल विज्ञान, पोषण, प्रतियोगिता और उच्चस्तरीय प्रदर्शन तक खिलाड़ी को हर जरूरी सहयोग एक सुनियोजित व्यवस्था के तहत मिले।

मुख्यमंत्री श्री साय ने खेलवार प्रशिक्षित और योग्य कोचों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जिस खेल की जहां संभावनाएं अधिक हैं, वहां उसी के अनुरूप विशेषज्ञ प्रशिक्षकों की पदस्थापना और आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बैठक में आधुनिक स्पोर्ट्स साइंस सुविधाओं के विकास पर भी विस्तृत चर्चा हुई। खिलाड़ियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए पोषण, स्वास्थ्य परीक्षण, मनोवैज्ञानिक सहयोग, फिटनेस, चोटों से बचाव और पुनर्वास जैसी सेवाओं को प्रशिक्षण व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाने की योजना पर विचार किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में तकनीक और खेल विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। छत्तीसगढ़ के खिलाड़ियों को भी आधुनिक प्रशिक्षण की इन सुविधाओं का लाभ मिलना चाहिए। बैठक में



फीडर सेंटर से सेंटर ऑफ एक्सीलेंस तक बनेगा प्रशिक्षण का मजबूत तंत्र

बैठक में मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन के अंतर्गत एथलेटिक्स, तीरंदाजी, हॉकी, मुक्केबाजी, कुश्ती, भारोत्तोलन, तैराकी, बैडमिंटन, जूडो और कबड्डी सहित प्राथमिकता वाले खेलों के विकास की कार्ययोजना पर चर्चा हुई। जमीनी स्तर से प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए फीडर सेंटर, उच्च प्रदर्शन प्रशिक्षण केंद्र और उत्कृष्टता केंद्र विकसित करने की प्रस्तावित व्यवस्था की समीक्षा की गई। फीडर सेंटरों के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान कर उन्हें प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को क्रमशः खेल अकादमियों और उच्चस्तरीय प्रशिक्षण केंद्रों से जोड़ा जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रतिभाओं की पहचान के बाद उनके प्रदर्शन और प्रगति की नियमित निगरानी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए ऐसी व्यवस्था विकसित की जाए, जिससे प्रत्येक चयनित खिलाड़ी के प्रशिक्षण, प्रदर्शन और आवश्यकता का नियमित आकलन हो तथा बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को अगले स्तर तक पहुंचने के अवसर मिलते रहें।

बिलासपुर स्थित स्पोर्ट्स एक्सीलेंस सेंटर के विस्तार की योजना की भी समीक्षा की गई। सेंटर में आवासीय खिलाड़ियों की वर्तमान क्षमता 165 से बढ़ाकर 300 करने तथा यहां संचालित खेल विधाओं का विस्तार करने की योजना है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश में पहले से उपलब्ध खेल अधोसंरचनाओं का अधिकतम और बेहतर उपयोग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मौजूदा स्ट्रेडिथर्मों, खेल मैदानों और प्रशिक्षण केंद्रों के नियमित रखरखाव के साथ आवश्यकतानुसार उनका उन्नयन किया जाए, ताकि खिलाड़ियों को गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रशिक्षण के साथ खिलाड़ियों को नियमित प्रतियोगिता का अवसर मिलना भी आवश्यक है। प्रतियोगिताओं से खिलाड़ी अपने प्रदर्शन का आकलन कर पाते हैं और उनमें बड़े मुकामों के लिए आवश्यक आत्मविश्वास विकसित

होता है। बैठक में टैलेंट हंट और मुख्यमंत्री ट्रॉफी के माध्यम से विकासखंड, जिला और राज्य स्तर पर नियमित प्रतियोगिताएं आयोजित करने की प्रस्तावित व्यवस्था पर चर्चा की गई। इसके माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों के खिलाड़ियों को भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का मंच मिलेगा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को चिन्हित कर उच्चस्तरीय प्रशिक्षण और आगे की प्रतियोगिताओं में भागीदारी के अवसर प्रदान किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि छत्तीसगढ़ के हर प्रतिभाशाली खिलाड़ी को अपनी क्षमता साबित करने का अवसर मिले। गांव के खेल मैदान से शुरू हुआ उसका सफ़र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचे। मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन के माध्यम से हम ऐसी व्यवस्था विकसित करना चाहते हैं, जो आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ को उत्कृष्ट खिलाड़ियों की नई पहचान दे।

गांवों और दूरस्थ अंचलों तक पहुंचे खेल प्रतिभाओं की खोज

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि खेल प्रतिभाओं की तलाश केवल बड़े शहरों और स्थापित खेल अकादमियों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। छत्तीसगढ़ के गांवों, जनजातीय अंचलों और दूरस्थ क्षेत्रों में अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी मौजूद हैं। तीरंदाजी, कबड्डी सहित विभिन्न खेलों से इन क्षेत्रों के युवाओं का स्वाभाविक जुड़ाव रहा है। ऐसी प्रतिभाओं को चिन्हित कर वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रशिक्षण से जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि खेल उत्कर्ष मिशन की सफलता इस बात से तय होगी कि हम जमीनी स्तर पर कितनी प्रतिभाओं को खोजकर उन्हें आगे बढ़ाने का अवसर दे पाते हैं। कोई भी प्रतिभाशाली खिलाड़ी केवल संसाधनों अथवा अवसर की कमी के कारण पीछे नहीं रहना चाहिए।

स्कूल से ही मजबूत होगी खेल संस्कृति

मुख्यमंत्री ने बच्चों को स्कूल स्तर से खेल गतिविधियों से जोड़ने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले गांवों में बच्चों का खेल के मैदानों से स्वाभाविक जुड़ाव होता था, लेकिन बदलती जीवनशैली के कारण यह जुड़ाव कम हुआ है। इसे फिर मजबूत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री साय ने स्कूलों में व्यायाम शिक्षकों के माध्यम से नियमित खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खेल बच्चों को शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने के साथ अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना भी विकसित करते हैं। स्कूल स्तर पर प्रतिभा की पहचान होने से योग्य बच्चों को समय रहते विशेषज्ञ प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा सकेगा और वे भविष्य में खेलों को एक बेहतर करियर के रूप में भी अपना सकेंगे।

गन्ने का मूल्य 425 रुपये प्रति क्विंटल होने पर किसानों में खुशी

उप मुख्यमंत्री शर्मा को गन्ना भेंटकर किया अभिनंदन



श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। गन्ने का मूल्य 425 रुपये प्रति क्विंटल होने पर कबीरधाम जिले के गन्ना उत्पादक किसानों में खुशी का माहौल है। इस अवसर पर आज बोड़ला सर्किट हाउस में भारतीय किसान संघ के पदाधिकारियों एवं क्षेत्र के किसानों ने उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। किसानों ने उन्हें गन्ना भेंटकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और गन्ना उत्पादकों के हित में लिए गए निर्णय के लिए बधाई देते हुए आभार जताया।

किसानों ने कहा कि गन्ने का मूल्य 425 रुपये प्रति क्विंटल होने

से जिले के गन्ना उत्पादक किसानों को आर्थिक लाभ मिलेगा। इससे खेती की लागत निकालने में मदद मिलेगी और किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि गन्ने का बेहतर मूल्य मिलने से किसानों का उत्साह बढ़ेगा तथा गन्ने की खेती को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

इस अवसर पर किसानों ने उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि किसानों की मेहनत और उनकी उपज का उचित मूल्य मिलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह निर्णय गन्ना उत्पादक किसानों के लिए राहत और उत्साह का विषय है।

किसानों ने गन्ना भेंटकर किया आत्मीय अभिनंदन: बोड़ला सर्किट हाउस में आयोजित स्वागत के दौरान भारतीय किसान संघ कवर्धा के जिला उपाध्यक्ष दिशेश चंद्रवंशी, बोड़ला ब्लॉक अध्यक्ष पंकज वर्मा सहित किसान विनोद वर्मा, महेश वर्मा, टीकाराम साहू, तुलश धुर्वे, प्रदुम्न वर्मा एवं रामपल्ल वर्मा ने उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा का गन्ना भेंटकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। सभी ने गन्ने का मूल्य 425 रुपये प्रति क्विंटल होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और किसानों के हितों के प्रति संवेदनशीलता के लिए आभार व्यक्त किया।

सड़क सुरक्षा का संदेश लेकर सूरजपुर में दौड़े 800 प्रतिभागी

अपना हेल्प व्यूआर लोगो का शुभारंभ, दुर्घटना की स्थिति में एक स्कैन से मिलेगी त्वरित सहायता

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सुरक्षित यातायात का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सूरजपुर में आयोजित मैराथन में करीब 800 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े और स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने राजमोहनी माता चौक से मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। दोनों मंत्री स्वयं बाइक रेली में शामिल हुए और नागरिकों से यातायात नियमों का पालन करने तथा सुरक्षित वाहन चलाने की अपील की।

जिला प्रशासन सूरजपुर और अपना हेल्प व्यूआर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मैराथन का समापन साधुराम सेवा कुंज में हुआ। बच्चों, युवाओं और नागरिकों ने दौड़ में भाग लेकर सड़क सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 'रोड सेफ्टी अपना हेल्प व्यूआर' के लोगो का भी शुभारंभ हुआ।



महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि सड़क सुरक्षा की शपथ स्वयं के साथ-साथ दूसरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का संकल्प है। सड़क दुर्घटनाओं का असर केवल घायल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे परिवार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को यातायात नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवा समाज में सकारात्मक बदलाव के वाहक हैं और उनकी भागीदारी से सुरक्षित यातायात का संदेश अधिक लोगों तक पहुंचेगा।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी

जायसवाल ने कहा कि यातायात नियमों का पालन औपचारिकता नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। सुरक्षित यातायात की शुरुआत हर व्यक्ति को स्वयं से करनी होगी। हेलमेट पहनना, सुरक्षित गति से वाहन चलाना और नियमों का पालन करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि वे दोषहिया वाहन चलाते समय हमेशा हेलमेट का उपयोग करते रहे हैं।

मंत्री जायसवाल ने सड़क दुर्घटना में घायल लोगों की मदद के लिए नागरिकों से आगे आने की अपील की। उन्होंने बताया कि पीएम राहगीर योजना के तहत

एक व्यूआर कोड से कई सुविधाएं

सूरजपुर जिले में 'अपना हेल्प व्यूआर' को पायलट परियोजना के रूप में शुरू किया गया है। एक व्यूआर कोड स्कैन करने पर नागरिक एम्बुलेंस और पुलिस को कॉल कर सकते हैं, परिजनों को सूचना भेज सकते हैं और गलत पार्किंग की स्थिति में वाहन मालिक को अलर्ट कर सकते हैं। पहले में उपयोगकर्ताओं की व्यक्तिगत जानकारी और पहचान की गोपनीयता का ध्यान रखा गया है। जिले के ब्लाईड स्पोर्ट पर भी व्यूआर कोड लगाए गए हैं, ताकि जरूरत पड़ने पर नागरिक आसानी से सहायता प्राप्त कर सकें।

दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को समय पर अस्पताल पहुंचाकर सहायता करने वाले पात्र व्यक्ति को 25 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान है। घायलों के लिए निर्धारित प्रावधानों के तहत कैशलेस उपचार की सुविधा भी उपलब्ध है। उन्होंने अल्ट अरोग्य मंदिरों के माध्यम से दी जा रही प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी भी साझा की।

कलेक्टर श्रीमती रेना जमील ने कहा कि दुर्घटना के बाद घायलों को समय पर अस्पताल पहुंचाने से कई जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। उन्होंने 'अपना हेल्प व्यूआर' को दुर्घटना की स्थिति में जरूरतमंदों

तक त्वरित और निःशुल्क सहायता पहुंचाने की दिशा में उपयोगी पहल बताया। उन्होंने नागरिकों से सड़क सुरक्षा के प्रति सजग रहने और दुर्घटना में घायलों की मदद के लिए आगे आने का आग्रह किया। कार्यक्रम में प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी वन विकास निगम के अध्यक्ष रामसेवक पैकरा, जनपद अध्यक्ष सूरजपुर स्वाति सिंह, पुलिस अधीक्षक योगेश पटेल, वनमंडलाधिकारी विपुल अग्रवाल, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विजेंद्र सिंह पाटेल, जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अमृतधारा: जब कोरापानी के आंगनों में मुसकराया जल जीवन

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। दूर पहाड़ियों और जंगलों के आंचल में बसे एक छोटे से गांव में सुबह की पहली किरण के साथ ही बर्तनों की खनखनाहट और मीलों दूर पानी की तलाश में पैदल चलती महिलाओं के कदमों की आहट... यह कहानी छत्तीसगढ़ के सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले की बिलाईगढ़ तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत परसदा छोटे के आश्रित गांव कोरापानी की है। महज 25 परिवारों और लगभग 110 की आबादी वाले इस छोटे से गांव के लिए स्वच्छ पीने का पानी वर्षों तक एक बड़ा सपना हुआ करता था।

लेकिन आज, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के कुशल नेतृत्व में जल जीवन मिशन ने इस गांव की तस्वीर और तकदीर दोनों बदल दी है। कभी पानी के गंधी संकट से जूझने वाला कोरापानी अब राज्य में ग्रामीण जल-स्वावलंबन की एक जगमगाती मिसाल बन चुका है। संकट के इस दौर में



जल जीवन मिशन कोरापानी के ग्रामीणों के लिए किसी वरदान से कम साबित नहीं हुआ। गांव में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के माध्यम से शकल ग्राम सोलर नलजल योजना शुरूआत की गई। देखते ही देखते गांव के क्षितिज पर 20 हजार लीटर क्षमता की विशाल पानी टंकी आकार लेने लगी और हरित ऊर्जा के रूप में सोलर पैनल स्थापित किए गए। इसके बाद पूरे गांव में पाइपलाइन का जाल

बिछाकर सभी 24 परिवारों को क्रियाशील घरेलू नल कनेक्शन से जोड़ दिया गया। इतना ही नहीं, गांव के आंगनबाड़ी केंद्र और शासकीय स्कूल तक भी नल पहुंचाए गए, जिससे अब बच्चों को भी शुद्ध और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध हो रहा है।

जैसे ही नलों से जल की धारा बही, ग्रामीणों के चेहरों पर बसर्स से गायब खुशी लौट आई। अब महिलाओं को पानी के लिए मीलों दूर भटकना नहीं पड़ता, जिससे

जल-संकट की पुरानी गाथा: कुएं, हैंडपंप और लंबी कतारें

कोरापानी का अतीत अभावों और संघर्षों से भरा था। गांव की महिलाओं और मासूम बेटियों का एक बड़ा कीमती समय केवल पीने का पानी जुटाने में ही बीत जाता था। सिर पर गगरियां उठाए कुएं, हैंडपंप और नदी की ओर जाती महिलाएं गांव की रोजमर्रा की नियति बन चुकी थीं। भीषण गर्मी के दिनों में जब भूजल स्तर नीचे गिर जाता था, तब हैंडपंप भी जवाब दे जाते थे और बूंद-बूंद पानी के लिए ग्रामीणों को भारी मशकत करनी पड़ती थी। वहीं, मानसून के आगमन के साथ मटमैले और दूषित पानी के इस्तेमाल से जलजनित बीमारियों का खतरा हर समय मंडराता रहता था। इस दैनिक संघर्ष ने न केवल ग्रामीणों की सेहत पर असर डाला, बल्कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता और बच्चों की पढ़ाई को भी प्रभावित किया।

उनके कीमती समय और शारीरिक श्रम की बचत हो रही है। इस बचे हुए समय का उपयोग वे अपने परिवार को देखभाल, घरेलू कार्यों और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में कर रही हैं। शुद्ध पेयजल मिलने से गांव में डायरिया और पेट से जुड़ी बीमारियों का प्रकोप भी खत्म हो गया है। बच्चों का स्वास्थ्य सुधरा है और उनकी उपस्थिति स्कूल में नियमित हुई है।

इस व्यवस्था की और अधिक पारदर्शी

व टिकाऊ बनाने के लिए 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत 2 अक्टूबर 2026 को गांधी जयंती के पावन अवसर पर श्रज अर्पण दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, पंचगण और जलवाहिनी की समर्पित महिलाओं की मौजूदगी में नलजल योजना को विधिवत ग्राम पंचायत को हस्तांतरित कर दिया गया।

गंजेपन से मुक्ति
मात्र 1 घंटे में

COMPLETE FAMILY SALON

हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी

पहले बाद में

JATU'Z
CUT N SHINE
93009-11331

रंगोली कैबल के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रॉनिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

GST NO. 22AHMPB9621P122
PH.: 0768-4060131

अनुप ट्रेडर्स
आर्टिफिशियल ज्वेलरी के विक्रेता
लिंग रोड, केम्प-2, पावर हाउस, भिलाई
मो. 09826389666, 8839749539



Urvashi Rautela

हार्ट कंट्रोलर के साथ म्यूजिक इंडस्ट्री में उतरीं उर्वशी रौतेला

एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला ने अपने इंडीएम (इलेक्ट्रॉनिक डॉस म्यूजिक) ट्रैक हार्ट कंट्रोलर के साथ म्यूजिक की दुनिया में कदम रखा, जिसमें उन्होंने मुख्य गायिका और लेखिका की भूमिका निभाई। अपने म्यूजिकल सफर के बारे में बात करते हुए उर्वशी ने बताया कि वह लंबे समय से इलेक्ट्रॉनिक डॉस म्यूजिक की ओर आकर्षित रही हैं और अपनी ऑन-स्क्रीन इमेज से हटकर इस जॉनर को आजमाना चाहती थीं। उन्होंने कहा कि यह ट्रैक उनके म्यूजिकल एक्सप्रेसन, भारतीय संस्कृति और परंपरा को एक साथ लाता है। इस बारे में बात करते हुए सनम रे की एक्ट्रेस ने कहा, भारत की पहली बॉलीवुड इंडीएम सिंगर बनकर बहुत गर्व महसूस हो रहा है, जिन्हें एक फुल-लेंथ इंडीएम रिकॉर्डिंग के लिए लीड वोकलिस्ट के तौर पर पेश किया गया है। किसी बॉलीवुड एक्ट्रेस के लिए यह पहली बार है और बॉलीवुड के इतिहास में भी ऐसा पहली बार हुआ है।

उन्होंने कहा, मैं लंबे समय से इलेक्ट्रॉनिक डॉस म्यूजिक की ओर आकर्षित रही हूँ, सिर्फ अपनी इमेज को सजाने के लिए नहीं बल्कि एक ऐसे रूप के तौर पर जिसे मैं हार्ट कंट्रोलर के लिए एक वोकलिस्ट और राइटर के तौर पर अपनाया चाहती थी। यह रिलीज हो गया है। यह उन सभी के लिए है जो इस जॉनर को पसंद करते हैं और उनके लिए भी जिन्होंने कभी किसी पूरे इलेक्ट्रॉनिक ट्रैक के बीच में किसी भारतीय नाम को अकेले गूँजते हुए

नहीं सुना है। यह रिकॉर्ड सिर्फ एक गाना नहीं है। इसके बोल सुनने पर महाभारत, वंश और गरिमा, भारतीय संस्कृति और परंपरा, और मेरे अपने नाम की झलक मिलती है।

गाने में रौतेला नाम जान-बूझकर शामिल किया गया है: इसे धीरे और सही ढंग से बोलें। उर्वशी इसका टाइटल है। जिस अर्थ से मैंने यह गाना बनाया है, उसमें ऊर का मतलब है दिल और वशी का मतलब है कंट्रोल करने वाला। इसलिए हार्ट कंट्रोलर। मैं किसी और महिला के बारे में नहीं बता रही हूँ। मैं बस इस नाम को गा रही हूँ।

जिन लोगों ने यह रिकॉर्ड सुना है, उन्होंने इसे बहुत पसंद किया है। बस इतना ही काफी है। मैं अपनी आवाज किसी और के गाने में नहीं दे रही हूँ। मैं इसे खुद दुनिया के सामने, और दुनिया से परे पूरे ब्रह्मांड के सामने पेश कर रही हूँ। हार्ट कंट्रोलर अब सिर्फ मेरा नहीं है, यह आपका भी है। ऑरिएंटल हाउस और हॉलीवुड के टॉप प्रोड्यूसर्स, असलन और तिमीर जाना के साथ यह रिकॉर्ड बनाकर मुझे बहुत खुशी और संतुष्टि मिल रही है।

फिल्मोग्राफी

उर्वशी ने सनी देओल के साथ फिल्म सिंह साहब द ग्रेट से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इसके बाद उन्होंने सनम रे, ग्रेट ग्रैंड मस्ती और हेट स्टोरी 4 जैसी फिल्मों में काम किया। उन्होंने ऋतिक रोशन की फिल्म काबिल के गाने मोन अमूर में भी एक स्पेशल अपीयरेंस दिया।

इस एक्टर को मिली उलटी नसीहत देवेन से कहा, खबरदार जो वजन घटाया तो नहीं मिलेगा काम

मशहूर एक्टर देवेन भोजानी ने हाल ही में अपने दिल का हाल बयां किया है कि मोटापा कैसे उनकी जिंदगी की मुसीबत बन गया है। एक्टर ने कहा कि लोगों को लगता है कि मोटा होने की वजह से ही उन्हें काम मिला। इसी के चलते वो ओटीटी पर शिष्ट हुए।

देवेन भोजानी ने लगभग चार दशक पहले अपने करियर की शुरुआत की थी। इतने सालों में, उन्हें 'साराभाई वसेंस साराभाई', 'बा बहू और बेबी' और 'ऑफिस ऑफिस' जैसे टीवी शो में प्यारे और मजेदार किरदारों को निभाने के लिए बहुत लोकप्रियता मिली। लेकिन इस इमेज की एक कीमत भी चुकानी पड़ी। उन्हें अपने शारीरिक रूप-रंग को लेकर बिना मांगी सलाहों भी सुननी पड़ती थीं।

देवेन भोजानी कहते हैं, 'मुझे सबसे अजीब सलाह यह मिली कि 'आप वजन कम मत करना, वरना रोल मिलना कम हो जाएगा।' मैंने कहा, 'भाई, लोग मुझे इसलिए कास्ट नहीं करते कि मैं मोटा हूँ। वे मुझे इसलिए कास्ट करते हैं क्योंकि मैं एक अच्छा एक्टर हूँ।'

उनके लिए, इन बातों से यह भी साबित हुआ कि लोगों ने कमिडी से हटकर उनके किए गए दूसरे किरदारों को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। वे कहते हैं, 'मुझे सच में बहुत बुरा लगा। मैं जान-बूझकर अलग-अलग तरह के रोल करने की कोशिश करता हूँ, लेकिन लोगों ने बस यही नतीजा निकाला कि मुझे वे रोल इसलिए मिले क्योंकि मैं मोटा हूँ। सोचिए, कैसी-कैसी बातें सुननी पड़ती हैं! लेकिन फिर मैंने उनकी बात मान ली, ताकि वे चुप हो जाएँ।'

हालांकि देवेन कुछ किलो वजन कम करना चाहते हैं, लेकिन वे अपने लुक को अपने काम से नहीं



जोड़ना चाहते। उन्होंने कहा, 'सच तो यह है कि कई वजहों से मैं वजन कम नहीं कर पा रहा हूँ - शायद मेरे स्वभाव या लाइफस्टाइल की वजह से। मैं ऐसा करना तो चाहता हूँ। लेकिन मैं कभी भी इस तरह नहीं सोचता कि मेरे वजन के घटने या बढ़ने के आधार पर मुझे मिलने वाला काम कम या ज्यादा होगा।'

छह साल पहले, देवेन ने टीवी छोड़ दिया ताकि लोग उनके बारे में अपनी सोच बदल सकें। उन्होंने स्ट्रीमिंग पर ध्यान देने का फैसला किया, जिससे लोग उनकी अलग-अलग तरह की एक्टिंग देख सकें।

देवेन ने कहा, 'मुझे निराशा हो रही थी कि मैं और भी बहुत कुछ कर सकता हूँ और मरने से पहले मुझे अलग-अलग तरह के रोल करने हैं। मुझे अपने किए गए कॉमिक रोल पर गर्व है, लेकिन मैं और भी कुछ करना चाहता था।'

कंडक्टर की वर्दी देखकर आज भी निकल जाते हैं रजनीकांत के आंसू



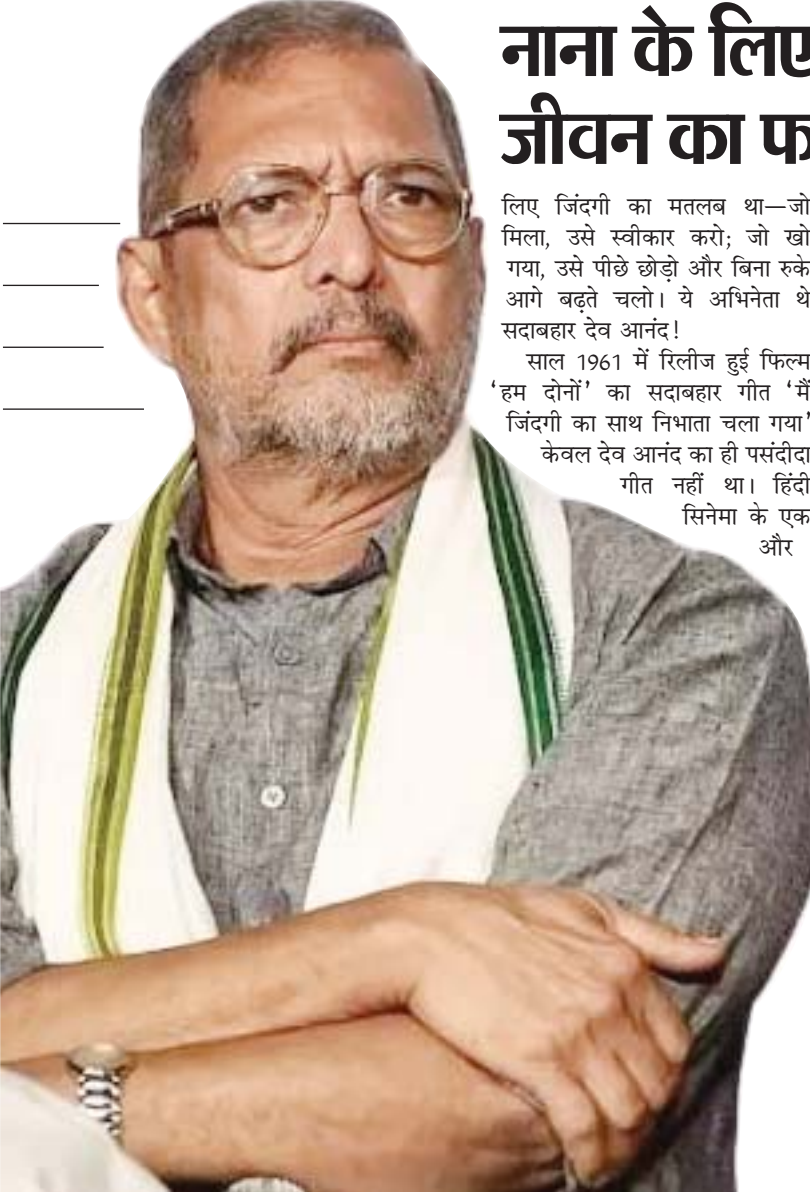
रजनीकांत कई दशकों से बड़े पर्दे पर राज कर रहे हैं। उन्होंने साल 1975 में आई के. बालचंद्र की फीचर फिल्म 'अपूर्वा रांगल' से डेब्यू किया था। हालांकि, उनके चाहने वाले इस बात से वाकिफ होंगे कि अभिनेता फिल्मों में आने से पहले बैंगलोर में बस कंडक्टर के रूप में काम किया करते थे।

सुपरस्टार रजनीकांत कई दशकों से बड़े पर्दे पर राज कर रहे हैं। उन्होंने साल 1975 में आई के. बालचंद्र की फीचर फिल्म 'अपूर्वा रांगल' से डेब्यू किया था। हालांकि, उनके चाहने वाले इस बात से वाकिफ होंगे कि अभिनेता फिल्मों में आने से पहले बैंगलोर में बस कंडक्टर के रूप में काम किया करते थे।

अब हाल ही में 'थलाइवा' ने अपनी आने वाली फिल्म 'जेलर 2' के इवेंट पर इस बारे में बात की और बताया कि वह अभी भी एक्टिंग से ज्यादा उस नौकरी को पसंद करते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, दिग्गज अभिनेता ने यह भी बताया कि क्यों वह 75 साल की उम्र में भी लीड रोल कर रहे हैं।

'जेलर 2 सुपर शो' के दौरान रजनीकांत ने कहा, 'मुझे एक्टिंग पसंद है, बेशक। लेकिन मुझे बस कंडक्टर की नौकरी उससे कहीं ज्यादा पसंद थी। कंडक्टर के तौर पर बिताए गए वे पांच साल वाकई कमाल के थे। मुझे आज भी उन दिनों की याद आती है। इसलिए, दिल से मैं मानता हूँ कि मैं एक कंडक्टर हूँ और हमेशा रहूँगा।'

अभिनेता ने आगे कहा, 'सच कहूँ तो मैं आज भी सुपरस्टारडम और इतनी शोहरत से खुद को जोड़ नहीं पाता। इसलिए मैं कभी-कभी बेंगलुरु जाता हूँ। जब मैं वहां बस देखता हूँ, तो मुझे खुशी होती है। जब मैं वह खाकी वर्दी देखता हूँ, तो पता ही नहीं चलता कि आंखों में आंसू आ जाते हैं। मैं खुद को बस कंडक्टर ही मानता हूँ।' वह एक अलग जिन्दगी थी। जब मैं पैसे नहीं होते थे पर लोगों के बीच रहकर उनका अपनापन खूब मिलता था। अब दूरियां बन गई हैं।



विनोद कुमार

जिंदगी में जब सब कुछ आपके खिलाफ हो, जब अपने भी साथ छोड़ दें, सपने टूट जाएँ और हालात आपको हार मानने पर मजबूर कर दें, तब आप क्या करेंगे? परेशान होंगे, किस्मत को कोसेंगे और बीते हुए कल को याद करके दुखी होंगे। लेकिन हिंदी सिनेमा के एक ऐसे महान अभिनेता थे, जिन्होंने जिंदगी को देखने का नजरिया ही कुछ अलग रखा। उनके

नाना के लिए ये गीत बन गया जीवन का फलसफा

लिए जिंदगी का मतलब था—जो मिला, उसे स्वीकार करो; जो खो गया, उसे पीछे छोड़ो और बिना रुके आगे बढ़ते चलो। ये अभिनेता थे सदाबहार देव आनंद!

साल 1961 में रिलीज हुई फिल्म 'हम दोनों' का सदाबहार गीत 'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया'

केवल देव आनंद का ही पसंदीदा गीत नहीं था। हिंदी सिनेमा के एक और

देखते ही देखते, एक पुराना गीत दो दिग्गज अभिनेताओं की भावनाओं से जुड़ गया। दोनों ने मिलकर इस सदाबहार गीत को गाया। गीत खत्म होने के बाद दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया। नाना ने अमिताभ बच्चन के साथ बातचीत के दौरान साफ कहा कि उनके जीवन दर्शन को समझना हो, तो 'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया' गीत को समझना चाहिए। यह केवल संगीत का एक खूबसूरत पल नहीं था, बल्कि दो कलाकारों के बीच भावनात्मक जुड़ाव का क्षण भी था।

इस गीत की पंक्तियाँ लोगों को जिंदगी जीने का सलीका सिखाती हैं। इस गीत को अपनी जादुई आवाज देने वाले मोहम्मद रफी साहब, इसके शब्द लिखने वाले साहिर लुधियानवी और इसकी धुन बनाने वाले संगीतकार जयदेव ने शायद भी नहीं सोचा होगा कि उनकी यह रचना आने वाली पीढ़ियों के लिए जिंदगी का दर्शन बन जाएगी।

आज न इस गाने को आवाज देने वाले मोहम्मद रफी साहब हमारे बीच हैं, न इसे लिखने वाले साहिर लुधियानवी, न इसका संगीत देने वाले जयदेव और न ही इस गाने पर अदायगी करने वाले देव आनंद। इस गीत को अपने जीवन का दर्शन मानने वाले नाना पाटेकर भी अब हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन इन महान कलाकारों की यादों के साथ यह गीत आज भी जीवित है। इसकी खूबसूरती यही है कि यह केवल एक दौर की कहानी नहीं कहता, बल्कि हर दौर के इंसान को जिंदगी का अर्थ समझाता है। विजय आनंद के निर्देशन में बनी फिल्म 'हम दोनों' में देव आनंद दोहरी भूमिका में नजर आए थे। उनके साथ साधना और नंदा ने भी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थीं। फिल्म के गीत-संगीत ने इसे हिंदी सिनेमा की यादगार फिल्मों में शामिल कर दिया। साहिर लुधियानवी के शब्द जिंदगी के अनुभवों को सरल लेकिन गहरे अर्थ देते हैं। जयदेव की धुन में सहजता और प्रवाह है, जबकि रफी साहब की आवाज में एक ऐसी बेफिक्री और आत्मियता है।

(द इंडियन आवाज से साधार)

आखिर कितना जरूरी है भोजन में सलाद का होना

जब भी डाइट की बात होती है तो ध्यान प्रोटीन, विटामिन और मिनरल्स पर ही जाता है।

फाइबर भी रोजाना डाइट के लिए आवश्यक होते हैं। फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज, दालें से मिलने वाला फाइबर कई तरह से सपोर्ट करता है। यह बावल मूवमेंट को बेहतर रखने के साथ ही कब्ज से बचाव करता है। पर बहुत ज्यादा फाइबर कभी-कभी गैस, ब्लोटिंग, ऐंठन या स्टूल में बदलाव जैसी परेशानी हो सकती है। डाइटरी फाइबर एक ऐसा कार्बोहाइड्रेट है जिसे शरीर पूरी तरह तोड़कर अवशोषित नहीं कर पाते। कुछ फाइबर लगभग बिना पचे आंतों में आगे बढ़ते हैं, जबकि कुछ प्रकार के फाइबर को बड़ी आंत में मौजूद गट बैक्टीरिया फर्मेंट कर सकते हैं। फाइबर का सबसे जाना-पहचाना फायदा पाचन से जुड़ा है। यह स्टूल का बल्क बढ़ाने, उसकी निरंतरता को बेहतर करने और बावल मूवमेंट को सपोर्ट करने में मदद कर सकता है।

शोधों के अनुसार खाने में फाइबर की मात्रा बढ़ने के साथ मल त्याग में निरंतरता, मल का नरम होना, बावल की फ्रीक्वेंसी बढ़ने तथा गट ट्रांसिट टाइम कम होने के बीच संबंध पाया गया है। इससे कब्ज के कारण होने वाली बीमारियों, विशेषकर बवासीर जैसी बीमारियों में न केवल आराम मिलता है बल्कि उन्हें दूर करने में भी मदद मिलती है। फाइबर केवल कब्ज के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है। हाई फाइबर फूड्स से विटामिन, मिनरल्स और अन्य प्लांट कम्पाउंड्स भी मिलते हैं। रोजाना की डाइट में फाइबर रीच संपूर्ण आहार को शामिल करना हेल्दी इटिंग पैटर्न का हिस्सा माना जाता है।



नवरात्रि में बिना प्याज-लहसुन के बनाएं बलोची पनीर

मक्खन में हल्के सिके हुए पनीर के टुकड़ों पर जब गाढ़े दूध, मसालों और चीज का क्रीमी टेक्सचर चढ़ता है, तो इसका स्वाद हर किसी का दिल जीत लेता है। त्यौहार के मौके पर बिना किसी झंझट के बेहद कम समय में बनने वाली यह सात्विक रेसिपी परिवार और मेहमानों के लिए एक रॉयल ट्रीट साबित होगी।

सबसे पहले 250 से 300 ग्राम ताजा पनीर लें और उसे चौकोर टुकड़ों में काट लें। अब एक बाउल में पनीर के टुकड़े डालें। इसमें कड़वा या भुना जीरा पाउडर, थोड़ी सी लाल मिर्च पाउडर, काली मिर्च पाउडर, स्वादानुसार सेंधा नमक और 1 चम्मच तेल डालें। सभी मसालों को पनीर के टुकड़ों पर अच्छे से कोट कर लें ताकि मसाले पनीर के अंदर तक समा जाएँ।

एक पैन या कड़ही में बटर और थोड़ा सा तेल गरम करें। तेल डालने से मक्खन जलता नहीं है। अब मैरीनेट किए हुए पनीर के टुकड़ों को पैन में डालें और मध्यम आंच पर हल्का सुनहरा होने तक शैलो फ्राई करें। जब पनीर दोनों तरफ से हल्का सिक जाए और मसालों की खुशबू आने लगे, तो उस पर 2-3 साबुत हरी

मिर्चें डालकर गैस बंद कर दें और पैन को एक तरफ रख दें।

एक दूसरे पैन में थोड़ा बटर पिघलाएं। अब इसमें 1 बड़ा चम्मच फलाहारी आटा डालें और धीमी आंच पर 1 मिनट के लिए भूँजें। इसके बाद पैन में 1 कप दूध डालें और लगातार चलाते रहें ताकि गांठें न बनें। मिश्रण के गाढ़ा होने तक इसे पकाएं और फिर इसमें कुटी हुई काली मिर्च, चिली फ्लेक्स और चुटकी भर नमक डालकर अच्छे से मिला लें।

अब तैयार की गई सफेद क्रीमी वाइट सॉस को फ्राई किए हुए पनीर वाले पैन के ऊपर धीरे-धीरे चारों तरफ फैलाते हुए डालें। क्रीमी सॉस और मसालों वाले पनीर का यह मिश्रण मिलकर एक बेहतरीन और रीच टेक्सचर तैयार करता है। इसे धीमी आंच पर 1-2 मिनट के लिए पकने दें ताकि सारे फ्लेवर आपस में मिल जाएँ।

चीजी ट्विस्ट और भाप में पकाएं

डिश को और भी स्वादिष्ट और अट्रैक्टिव बनाने के लिए इसके ऊपर कद्दूस किया हुआ मोजरेला या प्रोसेस्ड चीज छिड़कें। साथ ही थोड़ा सा बारीक कटा हरा धनिया और चिली फ्लेक्स ऊपर से सजाएं। अब पैन पर ढक्कन लगाएं और 2-3 मिनट के लिए बिल्कुल धीमी आंच पर छोड़ दें, ताकि चीज अच्छे से मेल्ट हो जाए और सारा स्टीम डिश में समा जाए। लीजिए तैयार हो गई आपकी बिना प्याज लहसुन की रेसिपी।

कौशल विकास से खुलेंगे रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर: मुख्यमंत्री

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ के युवाओं को आधुनिक तकनीक और उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप कौशल से सशक्त बनाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। तेजी से बदलती तकनीक और औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगार और स्वरोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने से विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण को नई गति मिलेगी। मुख्यमंत्री साय की उपस्थिति में मंत्रालय महानदी भवन में पीएम-सेतु योजना के प्रदेश में क्रियान्वयन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए दुर्ग और बस्तर क्लस्टर के लिए क्रमशः भिलाई स्टील प्लांट और एनएमडीसी लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) संपन्न हुआ। इन दोनों प्रतिष्ठित औद्योगिक संस्थानों की भागीदारी से आईटीआई में प्रशिक्षण को उद्योगों की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ने और युवाओं को रोजगारपरक कौशल प्रदान करने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में कौशल विकास को रोजगार और औद्योगिक प्रगति से जोड़ने की दिशा में व्यापक स्तर पर कार्य किया जा रहा है। पीएम-सेतु योजना इसी दूरदर्शी सोच का महत्वपूर्ण हिस्सा है। छत्तीसगढ़ में इस योजना के माध्यम से आईटीआई को केवल प्रशिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि आधुनिक कौशल, नवाचार, रोजगार और उद्यमिता के केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य किया



जाएगा।

उन्होंने कहा कि राज्य में नए उद्योगों और निवेश के विस्तार के साथ विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित मानव संसाधन की मांग भी बढ़ रही है। हमारा प्रयास है कि उद्योगों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप दक्ष मानव संसाधन छत्तीसगढ़ में ही उपलब्ध हो और प्रदेश के युवाओं को अपने कौशल के अनुरूप रोजगार के बेहतर अवसर मिलें। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों और उद्योगों के बीच मजबूत साझेदारी इस योजना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। उद्योगों की सीधी भागीदारी

से युवाओं को ऐसी तकनीकों और कार्यप्रणालियों का प्रशिक्षण मिलेगा, जिनका वास्तविक औद्योगिक इकाइयों में उपयोग हो रहा है। उन्होंने कहा कि उद्योगों की आवश्यकता और युवाओं के कौशल के बीच अंतर को कम करना जरूरी है।

पीएम-सेतु के माध्यम से पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण, आधुनिक उपकरण और व्यावहारिक अनुभव को उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप विकसित करने से प्रशिक्षण पूरा करने वाले युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। पीएम-सेतु योजना के अंतर्गत दुर्ग क्लस्टर के लिए स्टील

प्रदेश के 30 आईटीआई का होगा कार्याकल्प

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई प्रधानमंत्री स्किलिंग एंड एम्प्लॉयबिलिटी ट्रांसफॉर्मेशन अपग्रेडेड आईटीआई योजना के अंतर्गत देशभर के एक हजार शासकीय आईटीआई को आधुनिक बनाने के लिए लगभग 60 हजार करोड़ रुपये के निवेश का प्रावधान किया गया है। योजना का उद्देश्य औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों को आधुनिक तकनीक एवं उद्योगों की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप विकसित करना, प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करना और युवाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाना है। पीएम-सेतु योजना के क्रियान्वयन के लिए दुर्ग, कोरबा, सरगुजा, बस्तर, रायगढ़ और रायपुर सहित छह क्लस्टर चयनित किए गए हैं। इनमें छह हब आईटीआई और 24 स्पोक आईटीआई सहित कुल 30 शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का उन्नयन प्रस्तावित है। प्रदेश के छह क्लस्टरों में पांच वर्षों की अवधि में लगभग 1,446 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। प्रत्येक क्लस्टर में लगभग 241 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। इसके अंतर्गत हब आईटीआई के लिए 81 करोड़ रुपये तथा प्रत्येक स्पोक आईटीआई के लिए 40 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। योजना में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और संबंधित उद्योग भागीदार की वित्तीय सहभागिता क्रमशः 50 प्रतिशत, 33 प्रतिशत और 17 प्रतिशत निर्धारित की गई है।

आर्थीटी ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई भिलाई स्टील प्लांट एंकर इंडस्ट्री पार्टनर के रूप में सहभागी होगा। इस क्लस्टर में शासकीय आईटीआई दुर्ग को हब आईटीआई तथा शासकीय आईटीआई भिलाई, महिला आईटीआई भिलाई, राजनांदगांव और डौंडीलोहारा को स्पोक आईटीआई के रूप में शामिल किया गया है। भिलाई स्टील प्लांट की विशेषज्ञता और औद्योगिक अनुभव का लाभ प्रशिक्षण व्यवस्था को मिलेगा।

इससे विद्यार्थियों को औद्योगिक क्षेत्र में उपयोग होने वाली आधुनिक तकनीकों, मशीनों और कार्यप्रणाली के

अनुरूप व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री साय की उपस्थिति में आज भिलाई स्टील प्लांट के साथ एमओयू संपन्न कर इस सहभागिता को औपचारिक स्वरूप दिया गया।

बस्तर क्लस्टर के लिए एनएमडीसी लिमिटेड एंकर इंडस्ट्री पार्टनर के रूप में सहभागी होगा। बस्तर क्लस्टर में शासकीय आईटीआई बस्तर को हब आईटीआई तथा जगदलपुर, गीदम, कोडगांव और नारायणपुर के शासकीय आईटीआई को स्पोक आईटीआई के रूप में सम्मिलित किया गया है।

खास-खबर

नए शाला भवन निर्माण से अब गांव में ही मिलेगी बेहतर शिक्षा

रायपुर। शिक्षा किसी भी समाज के विकास की मजबूत नींव होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होने से बच्चों को आगे बढ़ने के नए अवसर मिलते हैं। इसी दिशा में महासमुंद जिले के विकासखंड बागबाहरा अंतर्गत ग्राम छुईहा में 75.23 लाख रुपये की लागत से शासकीय हाई स्कूल भवन का निर्माण पूर्ण किया गया है। इस भवन के बनने से गांव के विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर हाई स्कूल की सुविधा उपलब्ध होगी। लोक निर्माण विभाग ने बताया कि ग्राम छुईहा में शासकीय हाई स्कूल भवन का निर्माण कार्य 3 नवंबर 2025 को प्रारंभ हुआ था, जिसने 1 सितंबर 2026 को पूर्ण कर लिया गया। जिसकी कुल लागत 75.23 लाख रुपये है। ग्राम छुईहा में हाई स्कूल की सुविधा नहीं होने के कारण विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई के लिए दूरस्थ अंचल स्थित ग्राम भुरकोनी एवं अन्य स्थानों के हाई स्कूलों में जाना पड़ता था। इससे विद्यार्थियों को प्रतिदिन आवागमन में परेशानी होती थी। अब गांव में ही हाई स्कूल भवन का निर्माण पूर्ण होने से विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए बेहतर स्थानीय सुविधा उपलब्ध कराने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। ग्राम छुईहा के ग्रामीणों ने कहा कि स्थानीय स्तर पर हाई स्कूल की सुविधा उपलब्ध होने से विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई जारी रखने में सहूलियत मिलेगी। साथ ही हम अभिभावकों को भी बच्चों की शिक्षा के लिए दूरस्थ विद्यालयों पर निर्भरता कम होगी। उन्होंने कहा कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक सुविधाओं के विस्तार और बच्चों के उच्चल भविष्य के लिए सार्थक साबित होगा।

सारंगढ़ के महाविद्यालय में गुंजा 'कोई मतदाता छूटे ना' का संदेश

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। सशक्त लोकतंत्र की बुनियाद में प्रत्येक नागरिक और युवा की भागीदारी सर्वोपरि है। इसी सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सारंगढ़ स्थित शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय महाविद्यालय में वृहद मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

'कोई मतदाता छूटे ना' के संकल्प पर छात्र-छात्राओं को मतदान प्रक्रिया में निष्पक्ष और सक्रिय सहभागिता निभाने की शपथ दिलाई गई। इसी तरह नए पंजीकृत युवा मतदाताओं को डिजिटल ई-एपिक की प्रतियां वितरित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने कलात्मक



अभिव्यक्ति के जरिए मतदान के महत्व को रेखांकित किया। 'मेरा वोट मेरी ताकत' और 'वोट फॉर बेटर इंडिया' जैसे विषयों पर बनाई गई मनमोहक रंगोलियों ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कलेक्टर ने कहा कि 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर पहला वोट देना प्रत्येक युवा के जीवन की एक ऐतिहासिक उपलब्धि होती है। मतदान केवल अधिकार नहीं, बल्कि लोकतंत्र को मजबूत करने का दायित्व है। जब एक

युवा जागरूक होता है, तो वह पूरे समाज को सही दिशा दिखाता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं शत-प्रतिशत मतदान करें, बल्कि अपने परिजनों, मित्रों और पड़ोसियों को भी मताधिकार के प्रति प्रेरित करें। आगामी नगरीय निकाय चुनावों एवं निर्वाचन आयोग की प्रथमिकताओं का उल्लेख करते हुए कलेक्टर ने बताया कि 18 वर्ष पूर्ण कर चुके ऐसे सभी युवा जिनका नाम अब तक मतदाता

सूची में दर्ज नहीं है, वे प्रारूप-6 के माध्यम से त्वरित पंजीयन कराएं। जिले में बीएलओ, एसडीएम एवं तहसीलदारों के माध्यम से पंजीयन प्रक्रिया को सुगम बनाया गया है। उन्होंने कॉलेज के निर्वाचन साक्षरता क्लब की गतिविधियों की विशेष प्रशंसा की और कहा कि सोशल मीडिया के इस दौर में निर्वाचन आयोग की गतिविधियों और मतदान सुधारों की प्रामाणिक जानकारी समाज तक पहुंचाने में युवाओं की भूमिका बेहद अहम है।

महिलाओं का संबल बना सखी वन स्टॉप सेंटर

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। हिंसा और प्रताड़ना से प्रभावित महिलाओं को संकट की घड़ी में त्वरित सहायता और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने में सखी वन स्टॉप सेंटर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग के इन केंद्रों के माध्यम से पीड़ित महिलाओं को एक ही स्थान पर आश्रय, परामर्श, कानूनी सहायता, उपचार और पुलिस सहयोग उपलब्ध कराया जाता है। बलौद जिले का सखी वन स्टॉप सेंटर इस एकीकृत सहायता व्यवस्था का उदाहरण है।

केंद्र प्रशासक एकता कुर् ने बताया कि घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना, बाल विवाह अथवा किसी अन्य प्रकार की हिंसा से प्रभावित महिलाएं किसी



भी समय केंद्र से संपर्क कर सकती हैं। केंद्र का उद्देश्य उन्हें तत्काल राहत देने के साथ आगे की कार्रवाई और पुनर्वास में सहयोग करना है। जरूरतमंद महिलाओं को केंद्र में पांच दिनों तक निःशुल्क अस्थायी आश्रय, भोजन और देखभाल की सुविधा दी जाती है।

टी-20 सीरीज की तैयारी में जुटी जिम्बाब्वे महिला टीम, किया अभ्यास

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। अभ्यास सत्र के दौरान खिलाड़ियों ने मैच की रणनीति, बल्लेबाजी और गेंदबाजी से जुड़ी तैयारियों पर ध्यान केंद्रित किया। भारतीय टीम के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन करने के उद्देश्य से जिम्बाब्वे की टीम आगामी मुकाबलों के लिए अपनी तैयारियों में जुटी हुई है।

गौरतलब है कि भारत और जिम्बाब्वे की महिला टीमों के बीच 16, 18 एवं 20 अक्टूबर 2026 को टी-20 मुकाबले खेले जायें हैं। इस सीरीज को लेकर क्रिकेट प्रेमियों में ख़ासा उत्साह है। दोनों टीमों के बीच होने वाले



मुकाबलों में खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर सभी की निगाहें रहेंगी। रायपुर में अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट के इन मुकाबलों से छत्तीसगढ़ में क्रिकेट को बढ़ावा मिलने के साथ ही महिला क्रिकेट को नई पहचान मिलने की उम्मीद है।

मेहनत, लगन एवं समर्पण से मिलती है सफलता : विजय शर्मा

उप मुख्यमंत्री ने कवर्धा में 26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता का किया भव्य शुभारंभ

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। खेल भावना, अनुशासन और उत्साह के बीच कबीरधाम जिले में 26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता-2026 का आज भव्य शुभारंभ हुआ। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा ने कबीरधाम जिले के स्वामी करपाजी जी स्टेडियम कवर्धा में आयोजित समारोह में प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस दौरान ध्वज फहराया गया और विभिन्न जोंनों से आए खिलाड़ियों ने मार्च पास्ट कर खेल भावना, एकता और अनुशासन का परिचय दिया। उप मुख्यमंत्री शर्मा ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और उनका उत्साहवर्धन करते हुए बेहतर प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं।



को पहचानती है। सफलता का कोई अलग मंत्र नहीं है, इसके लिए जरूरी है कि खिलाड़ी अपने खेल को बेहतर बनाने के लिए पूरी लगन, मेहनत और समर्पण के साथ जुटे रहें। उप मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि खिलाड़ियों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जीत-हार के पीछे परेशान होने के बजाय अपनी खेल प्रतिभा को तराशने के लिए मेहनत करनी चाहिए और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना

चाहिए। उन्होंने प्रदेश के पांचों जोंन से आए सभी युवा खिलाड़ियों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि बस्तर के दूरस्थ अंचलों, अबूझमाड़, सुकमा और बीजापुर से आए खिलाड़ियों से मिलकर विशेष खुशी हुई। बस्तर के युवा अब नक्सलवाद के दंश को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने और पूरे देश में अपनी प्रतिभा से पहचान बनाने के लिए तैयार हैं। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, नगर पालिका परिषद कवर्धा के अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश चन्द्रवंशी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष कैलाश चन्द्रवंशी, जिला पंचायत के उपाध्यक्ष कैलाश चन्द्रवंशी, पुलिस जवाबदेही प्राधिकरण के सदस्य भगत पटेल तथा जनपद

प्रदेश के पांचों जोंन के 440 खिलाड़ी ले रहे हिस्सा

जिला प्रशासन एवं स्कूल शिक्षा विभाग, जिला कबीरधाम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह चार दिवसीय प्रतियोगिता 13 से 16 अक्टूबर तक चलेगी। इसमें प्रदेश के बिलासपुर, सरगुजा, बस्तर, रायपुर और दुर्ग जोंन के खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। प्रतियोगिता में बालक वर्ग से 220 और बालिका वर्ग से 220 खिलाड़ी शामिल हैं। इस प्रकार कुल 440 प्रतिभागी एवं अधिकारी प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं।

वॉलीबाल, सॉफ्टबाल और हैंडबाल में दिखाएंगे प्रतिभा

प्रतियोगिता में 14 वर्ष आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं की वॉलीबाल तथा 19 वर्ष आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं की सॉफ्टबाल और हैंडबाल स्पर्धाएं आयोजित की जा रही हैं। चार दिनों तक चलने वाली इन स्पर्धाओं में खिलाड़ी अपनी खेल प्रतिभा, कौशल और टीम भावना का प्रदर्शन करेंगे।

पंचायत कवर्धा की अध्यक्ष श्रीमती सुषमा गणपत बघेल, विजय पटेल, संतोष पटेल, मनोराज, लोकचंद साहू, उमंग पांडेय, जिला शिक्षा अधिकारी एफ आर वर्मा सहित खिलाड़ी उपस्थित रहे।

सामूहिक श्रमदान से दिया जल संरक्षण का संदेश

अम्बिकापुर। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जल संसाधन विभाग, संभाग क्रमांक-1, अम्बिकापुर द्वारा मंगलवार को सागर जलाशय में वृहद श्रमदान एवं स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभागीय अधिकारी-कर्मचारियों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए जलाशय परिसर की साफ-सफाई की तथा जलस्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश दिया। अभियान के दौरान सामूहिक श्रमदान कर जलाशय परिसर में स्वच्छता गतिविधियां संचालित की गईं। साथ ही जलाशयों के पारिस्थितिकीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए जलस्रोतों को स्वच्छ, निर्मल एवं सुरक्षित बनाए रखने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

SAIRAM
Mobile Accessories

मोबाईल शॉप में कार्य करने हेतु लड़कों की आवश्यकता है

7000415602

Shop No. 78, Himalaya Complex, Supela, Bhilai

चौरसिया ज्वेलर्स

आकर्षक सोने चांदी के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

बेन्वेक्स एवं प्रहलत उपलब्ध यहां उचित व्याज दर पर धरवी रखी जाती है

मुक्तिधाम रोड, रामनगर, सुपेला, भिलाई

9827938211, 9827171332

CAR DECOR

House Of Exclusive Seat Cover, Car Stereos Matting & Sun Control Film & Other Accessories

Shop No.3 Nafish Tower. Opp. Indian Coffee House, Akashganga, Bhilai

Mo.9300771925, 0788-4030919

K. Satyanarayan

ROCKEY INDUSTRIES FURNITURE PALACE

Deals in: (Steel & Wooden) Luxury & Imported Furniture

Akash Ganga, Supela, Bhilai Ph. 22964330

Shri Vijay Enterprises

Sanitarywares, Tiles, CPVC Pipes & Bathroom Fittings etc.

Supela Market, Bhilai

PH. 0788-4030909, 2295573

खास खबर

पानी टंकी के नीचे जुआ खेलते 4 आरोपी गिरफ्तार

हसौद। सक्ती जिले के हसौद थाना क्षेत्र के बाजार चौक में 52 पत्ती ताश से रुपए-पैसों का दांव लगाकर जुआ खेल रहे चार लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे और जुआ फंड से 1560 रुपए नकद, 52 पत्ती ताश, दो कलथई रंग की बोरियों के फटे टुकड़े जब्त किए हैं। मामले में छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिक्रिया अधिनियम 2022 की धारा 3(2) के तहत अपराध दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार 12 अक्टूबर को मुखबिर से सूचना मिली थी। ग्राम हसौद के बाजार चौक में पानी टंकी के नीचे कुछ लोग काट पत्ती नामक जुआ खेल रहे थे। सूचना पर पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी। चार लोगों को जुआ खेलते पकड़ा गया। गिरफ्तार आरोपियों में कोमल, संतोष, रवि, खिरोज कुमार शामिल हैं। चारों हसौद के निवासी हैं।

वेतन नहीं मिलने से नाराज कर्मचारियों ने जड़ा ताला

राजनांदगांव। घुमका सहकारी समिति में कार्यरत कर्मचारियों को पिछले नौ माह से वेतन नहीं मिला है। जिससे नाराज कर्मचारियों ने समिति में ताला जड़कर चाबी प्राधिकृत अधिकारी के हवाले किया है। वही समिति में सूचना लगाया गया है। कि, वेतन नही मिलने तक 14 अक्टूबर से बैंक का कामकाज बंद रहेगा। कृषक सेवा सहकारी समिति मर्यादित घुमका के कर्मचारियों की माने तो विगत नौ माह से वेतन अग्रस्त है, जिसके संबंध में विभाग के सक्षम अधिकारी उपायुक्त सहकारिता एवं उपपंजीयक सहकारी संस्थाएँ जिला मुख्यालय एवं सीईओ राजनांदगांव एवं शाखा प्रबंधक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक शाखा घुमका एवं सहकारी समिति मर्यादित घुमका को अवगत कराते हुए वेतन दिलाने के लिए गुहार लगाई थी, लेकिन आज तक कर्मचारियों की समस्या का निराकरण नहीं हुआ है।

स्कूटी में छिपा मिला बेहद जहरीला कॉमन करैत

कोरबा। घर के बाहर खड़ी एक्टिवा के वाइजर में जहरीला कामन करैत सांप छिपा मिला। समय रहते परिवार की नजर सांप पर पड़ गई, जिससे संभावित हादसा टल गया। सूचना पर वन विभा। ग और रेस्क्यू कोरबा रेस्क्यू सोसायटी की टीम मौके पर पहुंची और सावधानी से सांप को बाहर निकालकर सुरक्षित डिब्बे में बंद किया। घटना पोड़ीबहार निवासी अंजलि यादव के घर के बाहर की है। परिवार ने एक्टिवा में सांप को छिपा देखा तो उन्होंने इसकी सूचना वन विभाग और आरसीआरएस को सूचना दी गई। सांप कॉमन करैत था, जो बेहद विषैले सांपों में शामिल है। आरसीआरएस अध्यक्ष अविनाश यादव अपने सहयोगी मानस के साथ मौके पर पहुंचे। सांप एक्टिवा के वाइजर के संकरे हिस्से में छिपा हुआ था। ऐसी जगह से उसे निकालने में विशेष सावधानी बरतनी जरूरी थी। छेड़छाड़ करने या खुद पकड़ने की कोशिश में सांप के काटने का खतरा हो सकता था। टीम ने सावधानीपूर्वक रेस्क्यू कर सांप को बाहर निकाला और डिब्बे में बंद कर दिया।

कोरवा आदिवासी की तीर मारकर हत्या, दो के खिलाफ केस दर्ज

श्रीकंचनपथ न्यूज

कोरबा। जिले के श्यांग थाना क्षेत्र के ग्राम सिमकेंदा सिरकी डुगारू में एक कोरवा आदिवासी की हत्या का मामला सामने आया है। रामदुलार कोरवा का शव घर के सामने खून से लथपथ हालत में मिला। मृतक की पत्नी ने गांव के ही दो लोगों पर तीर-धनुष और सबल्ल से हमला कर हत्या करने का आरोप लगाया है।

पुलिस ने दोनों के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घटना 10 अक्टूबर की रात करीब नौ बजे की है। मृतक की पत्नी बुधवारी कोरवा ने 11 अक्टूबर की सुबह घटना की जानकारी दी। उसने आरोप लगाते हुए बताया कि घरेलू बातों को लेकर अघन कोरवा और नंदू कोरवा ने उसके पति पर हमला किया, जिससे उनकी मौत हो गई।

मामले में पुलिस ने अघन कोरवा 22 वर्ष और नंदू कोरवा 65 वर्ष, दोनों निवासी ग्राम सिमकेंदा सिरकी डुगारू, के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की

सीआरपीएफ के सब इस्पेक्टर ने खुद को मारी गोली, इलाज के दौरान हुई मौत

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले से सनसनीखेज मामला सामने आया है। मेड्रुगुडम कैंप में पदस्थ सीआरपीएफ के सब इस्पेक्टर ने अपने सर्विस हथियार से खुद को गोली मार ली। घटना के बाद उन्हें तत्काल उपचार के लिए इन्मागुडू कैंप ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। फिलहाल, पुलिस ने यर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मध्यरात्रि लगभग 12 बजे हुई। कैंप में 131वीं वाहिनी सीआरपीएफ में पदस्थ उपनिरीक्षक देवानंद यादव ने अज्ञात कारणों से अपने सर्विस हथियार से खुद को गोली मार ली। गोली चलने की जानकारी मिलते ही कैंप में मौजूद साथी जवानों ने तत्काल उन्हें फ़ील्ड एंबुलेंस के माध्यम से प्राथमिक उपचार के लिए इन्मागुडू कैंप पहुंचाया।

15.737 किलो गांजा के साथ 3 युवक गिरफ्तार : राजस्थान के रहने वाले आरोपी ग्राहक तलाश रहे थे

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। दुर्ग में गांजा बेचने के लिए ग्राहक तलाश रहे राजस्थान के तीन युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से कुल 15.737 किलो गांजा और तीन मोबाइल फोन जब्त किए गए हैं। तीनों पुराने पुल के पास पुलगांव नाला स्थित हनुमान मंदिर के बगल में खड़े थे। उनके पिड्डू बैग में गांजा रखा था और वे उसे बेचने की तैयारी कर रहे थे। मामला पुलगांव थाना क्षेत्र का

है। दरअसल, 13 अक्टूबर को पुलिस को सूचना मिली थी कि पुराने पुल के पास तीन युवक गांजा लेकर बिक्री के लिए ग्राहक तलाश रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घेराबंदी कर तीनों को पकड़ लिया। तलाशी और जरूरी कानूनी कार्रवाई के दौरान आरोपियों के बैग से गांजा मिला। वजन करने पर इसकी कुल मात्रा 15.737 किलो निकली। पुलिस ने तीनों मोबाइल फोन भी जब्त किए हैं। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट



के तहत मामला दर्ज कर उन्हें न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

तीनों आरोपी राजस्थान के रहने वाले

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान कालू राम माहिया (19), अभिमन्यु सिंह (20) और रामानंद चौधरी (18) के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, कालू राम माहिया और रामानंद चौधरी राजस्थान के बीकानेर जिले के श्रीद्वारगढ़ थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं।

वहीं, अभिमन्यु सिंह राजस्थान के सीकर जिले का निवासी है।

गांजा कहां से लाए, जांच कर रही पुलिस

पुलिस ने अब तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि आरोपी गांजा कहां से लाए थे और इसे किस बेचने वाले थे। इस काम में उनके साथ कोई अन्य व्यक्ति भी शामिल है या नहीं, इसकी भी जानकारी राजस्थान के बीकानेर जिले के पुलिस इन बिंदुओं पर जांच कर रही है।

सराफा कारोबारी से 1.88 करोड़ की ज्वेलरी की ठगी, मास्टरमाइंड अरेस्ट

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। रायपुर के सदर बाजार स्थित विंधि ज्वेलर्स से 1.88 करोड़ के सोने-चांदी और हीरे के आभूषण धोखाधड़ी से हड़पने का मामला सामने आया था। इस मामले में पुलिस ने मंगलवार को मास्टरमाइंड महिला को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने खुद को नगर निगम के आवास विभाग की कर्मचारी बताया था।

इस तरह उसने कारोबारी का विश्वास जीता और गलत दस्तखत वाले चेक देकर करोड़ों का चेक आभूषण ले लिए। इस धोखाधड़ी में एक दूसरी महिला भी शामिल है, जो अभी फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। यह मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है।

पुलिस के मुताबिक भाठगांव में रहने वाले कारोबारी रिखब बरडिया ने सिटी कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बताया कि 24 अगस्त 2026 को किरण साहू एक महिला साथी के साथ उनकी दुकान पहुंची। किरण ने खुद को नगर निगम के आवास विभाग में काम करने वाली कर्मचारी बताया। इससे कारोबारी को उन पर भरोसा हो गया। दोनों महिलाओं ने पहली बार में करीब 37 लाख रुपए के आभूषण खरीदे। इसके बदले उन्होंने 250 ग्राम सोने का बिस्किट और 7 लाख रुपए



कैश दिए। बाकी 15 लाख रुपए के भुगतान के लिए चेक दिया। 2 दिन बाद यानी 26 अगस्त को दोनों महिलाएं फिर दुकान पहुंचीं। इस बार वे करीब 1.73 करोड़ रुपए के सोने, चांदी और हीरे के आभूषण ले गईं। साथ ही, दो-तीन दिन में सोने के बिस्किट देने का भरोसा दिलाया। कारोबारी ने 1 सितंबर को 15 लाख रुपए का चेक बैंक में जमा किया, लेकिन उस पर गलत दस्तखत होने के कारण चेक काबू से हो गया। उसने न तो बकाया राशि का भुगतान किया गया और न ही आभूषणों का हिसाब दिया। पीड़ित की शिकायत के अनुसार दोनों महिलाएं कुल 1,88,37,630 रुपए के सोने, चांदी और हीरे के आभूषण लेकर चली गईं। इसके बाद भुगतान नहीं कर धोखाधड़ी की गई। पूछताछ में उरला की रहने वाली किरण साहू (28) ने अपनी महिला साथी के साथ मिलकर वादादात में शामिल होना स्वीकार किया। इसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का व्हाट्सएप अकाउंट हैक कर लोगों से रुपये की मांग

श्रीकंचनपथ न्यूज

सरगुजा। छत्तीसगढ़ की महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का व्हाट्सएप अकाउंट हैक होने का मामला सामने आया है। अकाउंट हैक करने के बाद अज्ञात लोगों ने मंत्री के संपर्कों को मैसेज भेजकर 32 हजार और 52 हजार रुपये की मांग की। मैसेज के साथ यूपीआई क्यूआर कोड भी भेजे गए। जानकारी के मुताबिक, मंगलवार को सूरजपुर में सड़क सुरक्षा अभियान के तहत आयोजित वाइक रैली के दौरान समर्थकों ने मंत्री को इसकी जानकारी दी। इसके बाद मंत्री ने स्वयं जांच की, तो मामला सही पाया गया।

बताया जा रहा है कि हैकर ने मंत्री के नाम से मैसेज भेजकर यूपीआई बंद होने और तत्काल पैसों की जरूरत होने की बात कही थी। इसके बाद अलग-अलग लोगों से रकम ट्रांसफर करने को



कहा गया। मामले की जानकारी मिलने पर मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने सूरजपुर साइबर सेल को सूचना दी। उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को सतर्क करते हुए कहा कि उनके व्हाट्सएप अकाउंट से पैसे मांगने वाला कोई संदेश मिलने पर रकम न भेजे और किसी भी संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें। मंत्री के मुताबिक, इस मामले में साइबर थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने लोगों से संदेश की पुष्टि किए बिना किसी को भी पैसे ट्रांसफर नहीं करने की अपील की है।

चांपा में हथियारों के साथ चार संदिग्ध गिरफ्तार

श्रीकंचनपथ न्यूज

जांजगीर-चांपा। जिले में नवरात्रि पर्व के दौरान सुर्खडा व्यवस्था के बीच चांपा पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार संदिग्धों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से दो बड़े धारदार चाकू, लोहे की रॉड, बड़ा पेचकस, जूट का बोरा और तार बरामद किए हैं। चारों आरोपी ब्रेजा कार क्रमांक सीजी 04 एनएच 7770 में सवार थे। पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है। पुलिस के मुताबिक, बरपाली चौक के पास कुछ संदिग्धों के हथियार दिखाकर राहगीरों को डराने की सूचना मिली थी। इसके बाद थाना प्रभारी निरीक्षक कमलेश



शेण्डे के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मौके पर घेराबंदी कर ब्रेजा कार को रोका और उसमें सवार चार लोगों को पकड़ा।

वाहन की तलाशी के दौरान पुलिस को दो बड़े धादार चाकू, कार के अंदर छिपाकर रखी लोहे की रॉड, बड़ा पेचकस, जूट का

रायगढ़ में शादी का झांसा देकर नाबालिग से रेप बहला-फुसलाकर घर से भगा ले गया, आरोपी गिरफ्तार

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायगढ़। रायगढ़ में 16 साल के नाबालिग से रेप का मामला सामने आया है। आरोप है कि 34 साल के युवक ने शादी का झांसा देकर नाबालिग को घर से बहला-फुसलाकर ले गया और ओडिशा स्थित अपने घर में उसके साथ रेप किया। नाबालिग के लापता होने पर परिजनों ने पुलिस चौकी में शिकायत दर्ज कराई। फिलहाल, पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

मामला रैरूमाखुर्द पुलिस चौकी क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, 25 सितंबर को नाबालिग के पिता ने पुलिस चौकी में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि रात करीब 9 बजे खाना खाने के बाद परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने कमरों में सोने चले गए थे। उनकी 16 साल की बेटी भी अपने कमरे में सोई थी, लेकिन अगली सुबह वह कमरे में नहीं मिली।

परिजनों ने आसपास तलाश की, लेकिन बालिका का पता नहीं चला। इसके बाद पिता की रिपोर्ट पर पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ बहला-फुसलाकर ले जाने के संदेह में धारा 137(2) बीएनएस के तहत केस दर्ज कर



जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि बालिका को ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले के हिमगीर थाना क्षेत्र के रेगारपानी, भोगराकछार निवासी परमानंद कंवर (34) अपने साथ ले गया है और उसे अपने घर में रखा है।

सूचना मिलने पर पुलिस टीम तत्काल रेगारपानी रवाना

हुई। आरोपी के घर पहुंचने पर पुलिस को बालिका मिल गई, लेकिन आरोपी मौके से फरार था। पुलिस ने बालिका को सुरक्षित बरामद कर आगे की कार्रवाई की।

पीड़िता बोली- शादी का झांसा देकर किया रेप

महिला पुलिस अधिकारी ने नाबालिग का बयान दर्ज किया। काउंसिलिंग के बाद उसे उसके पिता के हवाले कर दिया गया। पीड़िता ने बताया कि परमानंद कंवर शादी का झांसा देकर उसे बाइक से रेगारपानी ले गया था। वहां उसने अपने घर में उसके साथ रेप किया।

पीड़िता के बयान के आधार पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफदर्ज केस में धारा 62(2)(ड) बीएनएस और पॉक्सो एक्ट की धारा 4 और 6 भी जोड़ी।

घटना के बाद से पुलिस फरार आरोपी की तलाश कर रही थी। इसी दौरान पुलिस ने उसे उसके गांव की मुख्य सड़क पर पल्सर बाइक के साथ पकड़ लिया। हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर आरोपी ने अपराध स्वीकार किया।

पुलिस ने घटना में इस्तेमाल पल्सर बाइक जब्त कर ली। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया।

Ashok JEWELLERY

Gifts • Toys • Cosmetics
Perfumes • Sisa Jewellery

Beside Parakh Jewellers,
Akshah Ganga,
Supela, Bhilai

Helllo: 0788-4052727

Mukesh Jain 9009959111
Rishabh Jain 8103831329

मिठाई की सबसे बड़ी
चुड़ी की दुकान

निखार बैंगल

मो.- 9826186026

Shop-47, 'A' Market, Sec-6, Bhilai Nagar, Distt., Durg (C.G.)

मिठाई मसाला उद्योग

शुद्ध कुटे हुए मसाले, पापड़,
अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी
का सामान इत्यादि

128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई,
फ़ोन. 2284508, मो. 9826137766

खास-खबर



बदहाल पीएम सड़कों पर मंत्री राजवाड़े हुई सख्त

सूरजपुर। भटगांव विधानसभा क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के अंतर्गत निर्मित सड़कों की खराब स्थिति को लेकर मंत्री एवं भटगांव विधायक लक्ष्मी राजवाड़े ने कड़ा रुख अपनाया है। क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान उन्हें सड़कों की बदहाली से अवगत कराया गया। इस पर संज्ञान लेते हुए मंत्री ने कलेक्टर, सूरजपुर को पत्र लिखकर संबंधित सड़कों को तत्काल सुधारने के निर्देश दिए हैं। श्रीमती राजवाड़े ने कहा कि नई बनी सड़कों की खराब हालत के कारण ग्रामीणों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। गारंटी अवधि के अंतर्गत आने वाली सड़कों की मरम्मत संबंधित ठेकेदारों से तत्काल कराने के निर्देश दिए हैं।

प्रिया को मिला मिनीमाता महतारी जतन का सहारा

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन की मिनीमाता महतारी जतन योजना श्रमिक परिवारों की महिलाओं के लिए मददगार साबित हो रही है। जांजगीर-चांपा जिले के नवागढ़ विकासखंड अंतर्गत ग्राम सेमरा निवासी श्रीमती प्रिया कश्यप को भी इस योजना के तहत 20 हजार रुपये की एकमुश्त आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है। इस राशि से उन्हें प्रसव के बाद अपने स्वास्थ्य, पोषण और नवजात शिशु की देखभाल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिली है। प्रिया के लिए मिनीमाता महतारी जतन योजना आर्थिक संबल बनकर आई है। प्रसव के बाद मां के स्वास्थ्य की देखभाल के साथ नवजात शिशु के पोषण और आवश्यक जरूरतों पर विशेष ध्यान देना होता है। इस दौरान पौष्टिक आहार, दवाइयों और अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करने से परिवार पर अतिरिक्त आर्थिक जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं।

पेड़ों को काटने एवं उन्हें लट्ठों में बदलने के लिए वन विभाग ने लगाई कार्यशाला; श्रमिक सुरक्षा सर्वोपरि

■ सही माप के काष्ठ से बढ़ेगी आमदनी

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम द्वारा काष्ठ निष्कासन में गुणवत्ता बढ़ाने, वन संरक्षण और श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कवर्धा के सिंगपुर बीट में एक दिवसीय व्यावहारिक

प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। वन मंत्री श्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यशाला में मैदानी अमले को वृक्षों के वैज्ञानिक पतन (वृक्ष कटाई) और लगुण (लट्टे तैयार करने) की उन्नत तकनीकों का जंगल में प्रत्यक्ष प्रदर्शन कर प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला में बाजार की मांग के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण काष्ठ तैयार करने और निगम का राजस्व बढ़ाने के लिए



निर्धारित लॉगिंग प्लान का शत-प्रतिशत पालन करने पर जोर दिया गया। मैदानी अमले को काष्ठ की लंबाई और निर्धारित श्रेणी के अनुसार कटाई एवं छंटाई करने की तकनीकी जानकारी दी गई, ताकि उपलब्ध काष्ठ का बेहतर उपयोग सुनिश्चित हो सके। काष्ठ सही माप का मिलने पर न केवल उनकी मांग बढ़ेगी बल्कि उससे आमदनी भी अधिक होगी।

प्रशिक्षण के दौरान वृक्षों की कटाई में

श्रमिकों की सुरक्षा के साथ आसपास के छोटे पौधों और प्राकृतिक पुनरुत्पादन को नुकसान से बचाने के उपाय बताए गए। छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम के प्रबंध संचालक श्री अमरनाथ प्रसाद के निर्देशन में यह कार्यशाला आयोजित हुई। क्षेत्रीय महाप्रबंधक राम अवतार दुबे, मंडल प्रबंधक राम कुमार सिदार सहित अन्य अधिकारी, कूप प्रभारी और मैदानी श्रमिक शामिल हुए।

मिशन मोड पर आगे बढ़ेगा छत्तीसगढ़ का पर्यटन क्षेत्र

500 करोड़ प्रस्तावित, जुटाए जाएंगे 1000 करोड़ और

■ चित्रकोट, मैनापाट, सिरपुर, राजिम और हसदेव बांगो सहित प्रमुख पर्यटन स्थलों में विकसित होगी विश्वस्तरीय सुविधाएं

■ 1,000 नए पर्यटन उद्यमी तैयार करने और 250 महिला स्व-सहायता समूहों को पर्यटन गतिविधियों से जोड़ने का लक्ष्य

■ पर्यटकों की संख्या दोगुनी करने, 12 हजार अतिरिक्त कमरों की क्षमता होगी विकसित

■ चार प्रमुख और 15 मिनी पर्यटन सर्किट, डिजिटल तकनीक से आसान होगा सफर

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध जनजातीय संस्कृति, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहर और धार्मिक आस्था के केंद्र हमारी विशिष्ट पहचान है। इन खूबियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर प्रभावी रूप से स्थापित करते हुए पर्यटन को स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास का मजबूत आधार बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पर्यटन विभाग की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि पर्यटन विकास का सीधा लाभ स्थानीय लोगों को मिलना चाहिए। पर्यटन स्थलों के आसपास रहने वाले युवाओं, महिलाओं, हस्तशिल्पियों, कलाकारों और छोटे व्यवसायियों के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर पैदा हों। स्थानीय खानपान, हस्तशिल्प, लोककला और संस्कृति को पर्यटन अर्थव्यवस्था से जोड़कर आय के स्थायी साधन विकसित किए जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि ‘पर्यटन से समृद्धि’ इस मिशन की मूल भावना होगी।

पर्यटन विभाग के सचिव ने मुख्यमंत्री पर्यटन विकास



मिशन की विस्तृत कार्ययोजना प्रस्तुत की। पर्यटन विकास के लिए 500 करोड़ रुपए की मूल मिशन निधि प्रस्तावित की गई है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक-निजी भागीदारी, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं और विभागीय अभिसरण के माध्यम से 1,000 करोड़ रुपए से अधिक की राशि जुटाने की कार्ययोजना तैयार की गई है।

चित्रकोट, मैनापाट, सिरपुर सहित प्रमुख पर्यटन स्थलों का होगा काराकल्प

मिशन के अंतर्गत प्रथम चरण में चित्रकोट जलप्रपात, मैनापाट, सिरपुर, हसदेव बांगो जलाशय और राजिम को उच्च प्रभाव वाले पर्यटन गंतव्यों के रूप में विकसित करने की योजना है। इसके साथ ही मायाली-बगीचा, चंपारण, सतरंगा, तीरथगढ़, देवरानी-जेठानी, कबीर चबूतरा, केर्दई, महामाया और चिल्भी घाटी सहित अन्य महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में भी

सुविधाओं के विस्तार की कार्ययोजना प्रस्तावित है। सड़क, पेयजल, शौचालय, पार्किंग, पर्यटक सहायता केंद्र, डिजिटल सूचना प्रणाली, प्राथमिक चिकित्सा और सुरक्षा विकसित की जाएगी। स्थानीय वास्तुकला, संस्कृति और प्राकृतिक परिवेश के संरक्षण का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा। मिशन के अंतर्गत 1,000 नए पर्यटन उद्यमी तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही 250 महिला स्व-सहायता समूहों को जोड़ने के अतिरिक्त 600 आतिथ्य एवं पर्यटक सहायता कर्मियों तथा 500 टूर गाइड और फ्रंटलाइन कर्मियों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में होमस्टे, स्थानीय व्यंजन, पारंपरिक हस्तशिल्प, लोककला, पर्यटन मार्गदर्शन, परिवहन और अन्य सेवाओं को बढ़ावा दिया जाएगा। इससे पर्यटन से होने वाली आय का बड़ा हिस्सा स्थानीय अर्थव्यवस्था में पहुंचेगा और युवाओं को अपने क्षेत्र में ही रोजगार एवं उद्यमिता के अवसर प्राप्त होंगे।

ग्रामोद्योग सचिव राणा ने किया छत्तीसगढ़ रेशम सेतु का निरीक्षण, विपणन की पहल

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। ग्रामोद्योग विभाग के सचिव राजेश सिंह राणा ने रायपुर में नवस्थापित छत्तीसगढ़ रेशम सेतु का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने महासमुंद्र, धमतरी, जांजगीर-चांपा एवं रायगढ़ सहित विभिन्न जिलों के महिला धागारूपा समूहों और कोसा धागा व्यापारियों से चर्चा कर रेशम उत्पादन एवं विपणन को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

सचिव श्री राणा ने कहा कि रेशम सेतु की स्थापना से महिला समूहों द्वारा उत्पादित रेशम धागे को बेहतर बाजार और उचित मूल्य मिल सकेगा। साथ ही व्यापारियों को स्थानीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण धागा उपलब्ध होगा, जिससे परिवहन खर्च और समय की बचत होगी।



बैठक में महिला समूहों ने कोसाफल की बढ़ती कीमतों और धागे का उचित विक्रय मूल्य नहीं मिलने की समस्या रखी। उन्होंने बताया कि इसके चलते इस कार्य का आकर्षण कम हो रहा है।

ग्रामोद्योग सचिव श्री राणा ने

समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक पहल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि महिला समूहों द्वारा तैयार अहिंसा सिल्क को अमारी रेशम ब्रांड के नाम से भी बेचा जा रहा है। साथ ही रेशम सेतु में विभिन्न जिलों के

महिला समूहों द्वारा तैयार रेशम धागों को अलग-अलग ब्रांड नामों से पहचान दी गई है।

श्री राणा ने बताया कि रेशम को एक अलग पहचान देने तथा उसकी ब्रांडिंग करने के लिए रायगढ़ के रेशन उत्पाद को फॉरेस्ट गोल्ड सिल्क, सरगुजा के रेशम को महामाया सिल्क, महासमुंद्र के रेशम को खल्लारी सिल्क तथा जांजगीर-चांपा के रेशम को चांपा सिल्क सहित अन्य जिलों के उत्पाद उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

उन्होंने अधिकारियों को रेशम उत्पादकों एवं व्यापारियों को ऑनलाइन जानकारी उपलब्ध कराने के लिए पोर्टल विकसित करने के निर्देश दिए। इस पहल से प्रदेश में रेशम उद्योग को मजबूती मिलने के साथ महिला समूहों के स्वरोजगार और आय में वृद्धि होने की उम्मीद है।

नोनी सशक्तिकरण योजना से पढ़ाई हुई आसान

जांजगीर-चांपा। नवागढ़ के ग्राम धुरकोट निवासी निकिता कहरा को श्रम विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना के तहत 20 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है, जिससे उनकी आगे की पढ़ाई को सहारा मिला है। सहायता राशि पढ़ाई जारी रखने और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनी है। मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना के माध्यम से पंजीकृत निर्माण श्रमिक परिवारों की पात्र बेटियों को 20 हजार रुपये की एकमुश्त आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। योजना का उद्देश्य बेटियों को आर्थिक संबल देकर उनकी शिक्षा, सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करना है। निकिता ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के प्रति आभार जताते हुए कहा कि उनके लिए यह सहायता शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने के साथ अपने सपनों को साकार करने का साधन है।

सुरक्षा बल के खाली शिविरों में संवर रही नई पीढ़ी

कुरुषनार : जहां फिजां में तैरती थी बारूद की गंध, अब वहां गूंज रही किलकारियां

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ का नाम सुनते ही कभी बीहड़, संवेदनशीलता और सुरक्षा चुनौतियों की तस्वीर जेहन में उभरती थी। आज वही अबूझमाड़ बदलाव की एक नई और सुखद इबारत लिख रहा है। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के विकासखंड ओरछा स्थित कुरुषनार की फिजाओं में अब डर की परछाई नहीं, बल्कि बच्चों की खिलखिलाहट और पढ़ाई का नया उत्साह है।

कुरुषनार का यह परिसर, जो कभी सुरक्षा बलों का एक मजबूत कैंप हुआ करता था और जहाँ से पूरे क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था संचालित होती थी, आज ‘सेवा संकल्प अभियान’ के तहत शिक्षा और उम्मीदों का जगमगाता केंद्र बन चुका है। समय के साथ जब क्षेत्र में सुरक्षा की स्थिति में अभूतपूर्व सुधार आया और बलों ने अगले संवेदनशील गंतव्य की ओर रुख किया, तो जिला प्रशासन ने इस खाली परिसर का ऐसा रचनात्मक उपयोग किया जिसने जनकल्याण की एक अनूठी मिसाल कायम कर दी है।

बंदूक की छांव से निकलकर विद्या के मंदिर में तब्दील हो चुके इस परिसर में वर्तमान में 110 आसू म बच्चे पूर्णतः सुरक्षित वातावरण में रहकर अपने सपनों को नए पंख लगा रहे हैं। दूरस्थ और वनांचल क्षेत्र होने के कारण यहाँ के बच्चों के लिए



गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सुरक्षित आवास हमेशा से एक बड़ी चुनौती रहा है। ऐसे में पूर्व सुरक्षा शिविर का आश्रम शाला के रूप में रूपांतरण होने से न केवल बच्चों को रहने के लिए एक महफूज छत मिली, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल शैक्षणिक माहौल तैयार हुआ है। दूरस्थ अंचल के इन बच्चों को आधुनिक दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने योग्य बनाने के लिए प्रशासन ने एक दूरदर्शी खाका तैयार किया है। जिला खनिज न्यास (डीएमएफ) के माध्यम से इस परिसर को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने का प्रस्ताव बनाया गया है। इसके अंतर्गत अबूझमाड़ के बच्चे अब केवल पारंपरिक पढ़ाई तक सीमित न रहकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) लैब के जरिए डिजिटल तकनीक, कोडिंग और आधुनिक विज्ञान की नई खोजों से रूबरू होंगे।

इसके साथ ही, बच्चों में स्वाध्याय, साहित्य और सामान्य ज्ञान के प्रति रुचि जगाने के लिए एक समृद्ध पुस्तकालय का निर्माण

भी प्रस्तावित है, जो उनकी कल्पनाशीलता और विचारों को विस्तार देगा। बच्चों के शारीरिक विकास, अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक आधुनिक खेल मैदान भी तैयार किया जाएगा।

सुरक्षा से विकास और उज्ज्वल भविष्य की आहट

कुरुषनार का यह ऐतिहासिक रूपांतरण केवल एक इमारत का बदलाव मात्र नहीं है, बल्कि यह इस बात का सजीव प्रमाण है कि जब सुरक्षा का विश्वास कायम होता है, तो विकास के द्वार स्वतः खुल जाते हैं। कुरुषनार की यह अनूठी पहल पूरे राज्य को यह संदेश देती है कि जहाँ कभी सुरक्षा का कड़ा पहरा था, आज वहाँ एआई तकनीक और पुस्तकों के जरिए नैनिहालों का उज्ज्वल भविष्य गढ़ा जा रहा है। यह सकारात्मक बदलाव अबूझमाड़ के बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ते हुए उन्हें कल के प्रतिभावान नागरिक, इंजीनियर, वैज्ञानिक और खिलाड़ी बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो रहा है।

